आपकी आशाओं का सुन्दर प्रतिबिम्ब

सहयोग राशि
30/- ₹

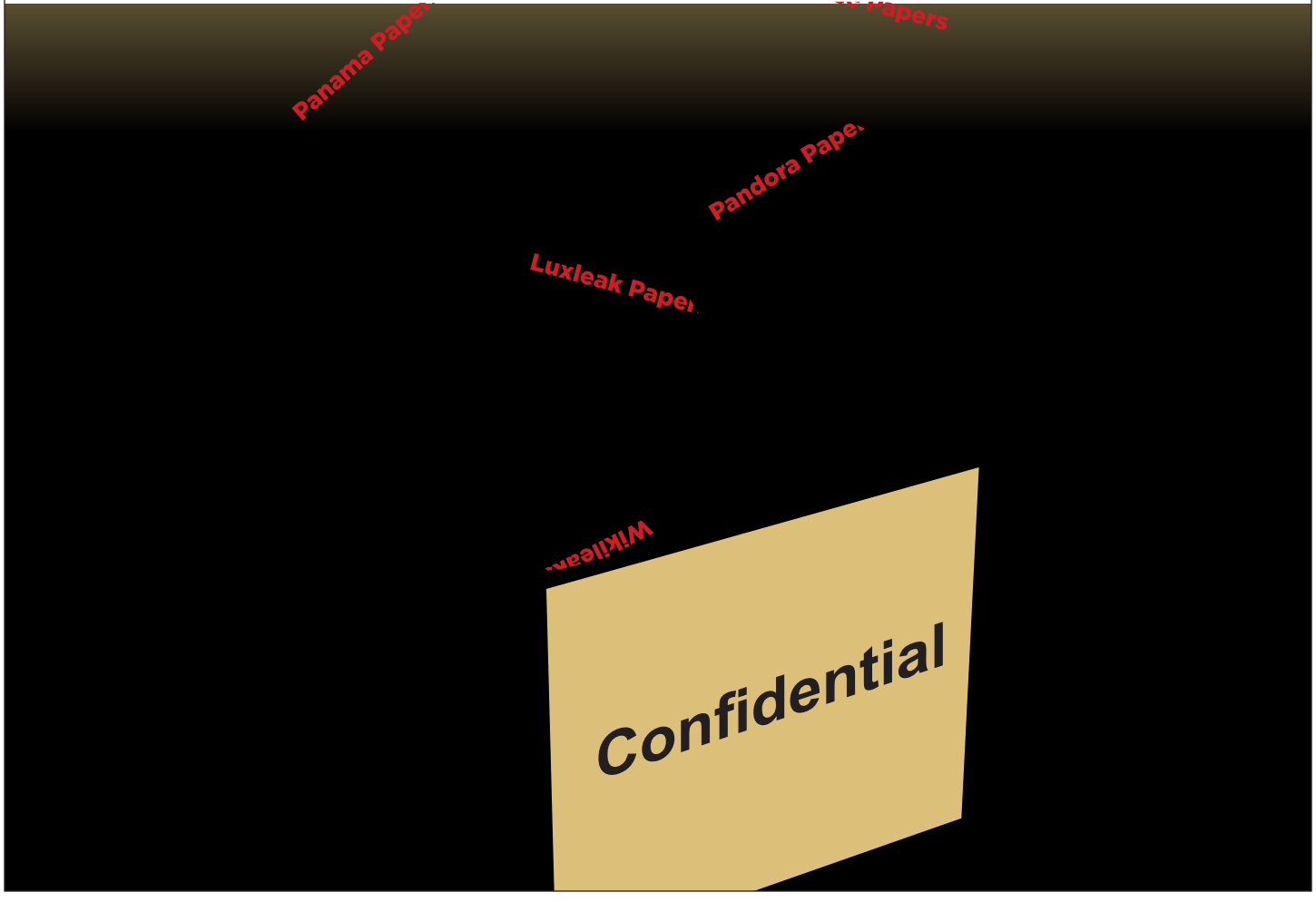
नवम्बर 2021

# क्रान्ति

मासिक

## पेपर्स लीक

## नवपूंजीवाद का घृणित खेल और तमाशबीन लोकतंत्र



यह अलिफ़ लाम मीम है। यह किताब-ए-इलाही है। इसमें कोई सन्देह नहीं कि यह एक ईश्वरीय पुस्तक है, ईश्वर से डरने वालों के लिए एक मार्गदर्शन। उनके लिए जो ग़ैब पर ईमान लाते हैं, नमाज़ क़ायम करते हैं और जो कुछ हमने उन्हें दिया है उसमें से खर्च करते हैं। और उनके लिए जो ईमान लाते हैं उस चीज़ पर जो तुम पर उतारी गयी है जो तुमसे पहले उतारा गया, और आख़िरत पर यही लोग यक़ीन करते है। ये अपने रब के मार्गदर्शन में हैं, और यही लोग सफल होंगे।

सूरह बक़रह: 1-5

**Sajid carpet, Nagpur**

www.kanti.in

**संपादक**
शिब्ली अरसलान
editorkantimasik@gmail.com

**प्रबंधक**
नईम ख़ान
+91 9891160829

**सहयोग राशि**

| | |
|---|---|
| एक प्रति 30/- रु० | एक वर्ष 350/- रु० |
| दो वर्ष 670/- रु० | तीन वर्ष 950/- रु० |
| चार वर्ष 1200/- रु० | पांच वर्ष 1400/- रु० |

आजीवन रु० 4000/-
सऊदी अरब और खाड़ी के देशों के लिए 110/- रियाल
यूरोप व अमेरिका के लिए 40/- US डॉलर

ख़रीदार बनने, एजेंसी लेने, प्रचार-प्रसार एवं प्रबंधकीय मामलों के लिए सम्पर्क करें :

**कार्यालय :**
कान्ति मासिक, डी-314, दावत नगर,
अबुल फ़ज़्ल इन्कलेव, जामिया नगर,
ओखला, नई दिल्ली-110025

**हेल्पलाइन न०**
+91 8920589292

**Account Detail**
**NAME : KANTI**
**A/C NO : 0990839195**
**IFS CODE : IDIB000J029**
**TYPE : CURRENT**
**BANK : INDIAN BANK**
**BRANCH : JAMIA MILLIA ISLAMIA**
**NEW DELHI - 110025**

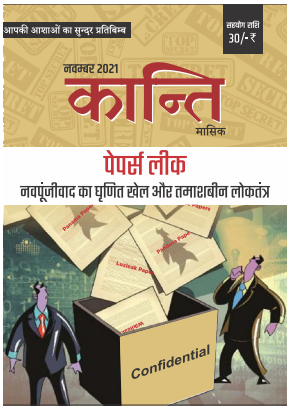
चेक / ड्राफ्ट 'कान्ति' के नाम से बनवाएं

मुद्रक एवं प्रकाशक मुहम्मद अहमद द्वारा दावत ट्रस्ट (रजि०), डी-314 दावत नगर, अबुल फ़ज़्ल इन्कलेव, जामिया नगर, नई दिल्ली-110025 से प्रकाशित एवं भारत ऑफ़सेट प्रेस, 2035, क़ासिम जान स्ट्रीट, बल्लीमारान, दिल्ली - 110006 से मुद्रित।
फ़ोन: 9818799223
**संपादक: शिब्ली अरसलान**

संस्था की लिखित अनुमति के बिना सम्पूर्ण या आंशिक पुनर्प्रकाशन पूर्णतः प्रतिबंधित है।

वर्ष 31 अंक 05 नवम्बर 2021

## आपकी आशाओं का सुन्दर प्रतिबिम्ब




# कान्ति मासिक

## इस अंक में

**अतिथि सम्पादकीय** 04
अंतिम ईशदूत की दयालुता
डॉ० फ़रहत हुसैन

**चिंतन** 07
ये वक़्त ख़ुदा की तरफ़ पलटने का है
मुत्तलिब मिर्ज़ा

**सौंदर्य बोध** 09
अपने रब को पहचानो
संपादन प्रभाग

**मुख्य स्तंभ** 11
पेपर्स लीक : नवपूंजीवाद का घृणित खेल और तमाशबीन लोकतंत्र
जुनैद अली

**दर्शन** 15
इस्लाम में मालदारी या ग़रीबी
ख़ुर्शीद अहमद

**संवेदना** 19
बुज़ुर्गों के प्रति कितना संवेदनशील है हमारा समाज?
डॉ० सलमान अरशद

**शिक्षा विमर्श** 21
मत रहना स्कूल भरोसे
डॉ० अबरार मुल्तानी

**टेक्नोलॉजी** 25
ब्रेन हैकिंग : 'काले आईनों' में दिखता...
डॉ० अबरार मुल्तानी

**सद्भावना** 29
मित्रता सबसे ऊपर...
डिम्पल कुमार स्वास्तिक

**राजनीति** 31
लोकतंत्र के लिए चुनाव प्रणाली में सुधार की आवश्यकता
डॉ० नफ़ीस अख़्तर

**अभिव्यक्ति के ख़तरे** 33
अल्पसंख्यक : लोकतंत्र का पैमाना
मुहम्मद यूसुफ़ 'मुन्ना'

**कैरियर** 37
लेखन : एक व्यापक क्षेत्र
मुहम्मद यूसुफ़ 'मुन्ना'

**इतिहास के झरोखे से** 39
शक, भारत और इस्लाम
डॉ० अब्दुर रशीद अगवान

**पर्यावरण** 41
कोविड ने हमें पर्यावरण के प्रति...
सुशील कुमार

**ज्वलंत** 43
संकट प्रबंधन, कोरोना महामारी के संदर्भ में
सय्यद अज़हरुद्दीन

**कहानी** 46
चोर
रशीद जहां

**आख़िरी पन्ना** 49
सत्य की खोज
नईम अलहिन्दी

अतिथि सम्पादकीय



# अंतिम ईशदूत की दयालुता

डॉ० फ़रहत हुसैन

हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) ईश्वर के संदेशवाहक हैं। ईश्वर की अपने बन्दों पर असीम कृपा है कि उसने हर युग में हर समुदाय के लिए पथ-प्रदर्शक नियुक्त किए, जो अपने-अपने कार्य-क्षेत्र एवं कार्य-अवधि में अपना कर्तव्य निभाते रहे। जब सभ्यता उन्नति करके वैश्विक दौर में पहुंची तो ईश्वर ने अपने अन्तिम संदेशवाहक को विश्व स्तरीय प्रकाशना (दिव्य क़ुरआन) देकर समस्त मानवजाति के लिए नियुक्त किया और आपको रहमते-आलम (संपूर्ण जगत के लिए दयालुता) की उपाधि प्रदान की।

'वमा अरसलना-क इल्ला रहमतल्लिल आ-ल-मीन'

(क़ुरआन, 21:107)

अनुवाद : हमने आपको (अर्थात् हज़रत मुहम्मद सल्ल० को) संपूर्ण जगत के लिए सर्वथा दयालुता (रहमत) बनाकर भेजा है।

हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) को परिस्थितिवश युद्ध भी करना पड़ा तथा न्याय स्थापना एवं क़ानून व्यवस्था हेतु अपराधियों को दंड भी दिया, परंतु आपके व्यक्तित्व का उभरा हुआ पक्ष दयालुता, क्षमादान, कृपादृष्टि, स्नेह और सौहार्द से परिपूर्ण है, जिसे अपने ही नहीं विरोधी भी स्वीकार करते हैं। हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) कमज़ोरों, बच्चों, महिलाओं, बूढ़ों और दास-दासियों के सहायक थे, अपनी पत्नियों, संतान और रिश्तेदारों के साथ प्रेम और स्नेह का व्यवहार करते थे, विरोधियों और शत्रुओं के लिए क्षमादाता थे, पशु-पक्षियों, पेड़-पौधों और अन्न-जल के प्रति दयाभाव रखते थे।

मक्का नगर में मुहम्मद (सल्ल०) और उनके अनुयायियों को मक्कावासियों के हाथों भयंकर कष्ट उठाने पड़े, यहां तक कि उनको और उनके परिवार वालों को तीन वर्ष की नज़रबन्दी झेलनी पड़ी परंतु वे स्वयं सब कुछ सहन करते रहे और अपने साथियों को धैर्य धारण करने की नसीहत करते रहे मगर कभी श्राप नहीं दिया, क्योंकि वे रहमते-आलम (संसार के लिए करुणानिधि) हैं। हां कभी दुआ की आवश्यकता पड़ी तो पीछे नहीं हटे। हुआ यह कि उन्हीं दिनों मक्का और उसके आसपास के क्षेत्र में भयंकर सूखा पड़ गया। विरोधी परेशान होकर पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) की सेवा में पहुंचे और विपत्ति दूर करने के लिए ईश्वर से दुआ करने का अनुरोध किया। मामला सर्वसाधारण की कठिनाई दूर करने का था। आप (सल्ल०) ने ईश्वर के समक्ष प्रार्थना की, जो तुरंत स्वीकार कर ली गई और मक्कावासियों की मुसीबत दूर हो गई।

**दयालुता और क्षमाशीलता का जो उदाहरण मक्का विजय के समय दुनिया ने देखा वह आश्चर्य में डाल देता हैं। इस विजय में न लड़ाई हैं, न रक्तपात और न विजयी फ़ौज में बड़ाई और घमंड। गत दो दशकों से शत्रुता बरतने वाले, मुसलमानों से युद्ध करने वाले और ईशदूत की हत्या का षड्यंत्र रचने वाले आज बेबस खड़े हैं। हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) को उन पर पूर्ण आधिपत्य प्राप्त हैं। वे दंड के अधिकारी भी हैं और स्वयं अपराधबोध का शिकार भी है कि हमने अपने अहंकार से वशीभूत होकर अकारण हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) और उनके सत्य संदेश का विरोध किया। यदि हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) उन्हें सज़ा देते तो किसी भी रूप में आपके कृत्य को ग़लत नहीं ठहराया जा सकता था। मगर आपकी घोषणा थी-"जाओ आज तुम सबको क्षमादान दिया गया, तुम सब मुक्त किए जाते हो।"**

ताइफ़ की घटना तो चकित कर देने वाली है। मक्का नगर की कुछ दूरी पर एक सुन्दर पहाड़ी बस्ती 'ताइफ़' है। अल्लाह के पैग़म्बर हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) ने वहां जाकर इस्लाम का संदेश उनके सामने रखा तो उन्होंने कड़ा विरोध किया। जब पैग़म्बर (सल्ल०) वहां से निराश लौट रहे थे तो उन्होंने आपको पत्थर मारे, जिससे आप चोटिल हो गए और आपके जूते ख़ून से भर गए। यह बड़ा हृदयविदारक दृश्य था। आप जैसे-तैसे एक बाग़ में पहुंच गए। ईश्वर की ओर से एक फ़रिश्ता आया और उसने कहा कि आप अनुमति दें तो ताइफ़ की इन दोनों पहाड़ियों के बीच मैं उन्हें कुचल कर समाप्त कर दूं। पैग़म्बर (सल्ल०) ने तुरंत उत्तर दिया "नहीं-नहीं, संभव है कि उनकी भावी पीढ़ी संमार्ग का अनुसरण करे।" घायलावस्था में भी आपका यह आचरण! क्योंकि आप रहमते-आलम हैं।

दयालुता और क्षमाशीलता का जो उदाहरण मक्का विजय के समय दुनिया ने देखा वह आश्चर्य में डाल देता है। इस विजय में न लड़ाई है, न रक्तपात और न विजयी फ़ौज में बड़ाई और घमंड। गत दो दशकों से शत्रुता बरतने वाले, मुसलमानों से युद्ध करने वाले और ईशदूत की हत्या का षड्यंत्र रचने वाले आज बेबस खड़े हैं। हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) को उन पर पूर्ण आधिपत्य प्राप्त है। वे दंड के अधिकारी भी हैं और स्वयं अपराधबोध का शिकार भी है कि हमने अपने अहंकार से वशीभूत होकर अकारण हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) और उनके सत्य संदेश का विरोध किया। यदि हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) उन्हें सज़ा देते तो किसी भी रूप में आपके कृत्य को ग़लत नहीं ठहराया जा सकता था। मगर आपकी घोषणा थी-''जाओ आज तुम सबको क्षमादान दिया गया, तुम सब मुक्त किए जाते हो।'' यह थी दयालुता की पराकाष्ठा और इस्लाम इसी व्यवहार से फैला। यही लोग आपके अनुयायी बनकर उस मिशन के वाहक बने।

हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) के दयाभाव और क्षमादान की घटनाओं से इतिहास के पन्ने भरे पड़े हैं, जिसे विरोधी भी स्वीकार करते हैं। इस्लाम की स्वाभाविक सरल, सहज शिक्षाओं तथा ईशदूत के उत्कृष्ट दयाभाव तथा स्नेहपूर्ण आचरण के कारण ही लोग इस संदेश की ओर खिंच आए। दिल तो दिल से जीता जाता है, तलवार से नहीं। आशय यह है कि इस्लाम के अन्तिम ईशदूत हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) का संपूर्ण जीवन उनकी शिक्षाएं, उनका मिशन मानवहित, दयाभाव और हमदर्दी का उत्कृष्ट नमूना है। ■■

मशहूर अंग्रेज़ फिलोसॉफर कारलायिल, मुहम्मद (सल्ल.) के बारे में लिखता है-"वो प्रकृति(कुदरत) की बड़ी गोद से निकला हुआ ज़िन्दगी का एक ज़बरदस्त दहकता हुआ अंगारा था जो दुनिया को बनाने वाले की तरफ से दुनिया को रोशन करने और जगाने के लिए आया था।" एक दूसरा विद्वान लिखता है-"आज तक किसी भी ज़माने में गहरे से गहरे मायनों में जो सच्ची से सच्ची और ज़्यादा से ज़्यादा लगन वाली आत्माएं पैदा हुईं हैं,हज़रत मुहम्मद उनमें से एक थे..."(Islam: Her Moral and Spiritual Value, a Rational and Psychological Study by Arthur Glyn Leonard)

जो अपने माल की हिफ़ाज़त करते हुए क़त्ल किया गया वह शहीद है और जो अपने घर वालों की हिफ़ाज़त करते हुए क़त्ल किया गया वह शहीद है और जो अपनी जान की हिफ़ाज़त करते हुए क़त्ल किया गया वह शहीद है और जो अपने दीन की हिफ़ाज़त करते हुए क़त्ल किया गया वह शहीद है।

(हदीस: नसई, अबू दाऊद)

STAR COLLECTION
NAGPUR




चिंतन



मुत्तलिब मिर्ज़ा

# ये वक़्त ख़ुदा की तरफ़ पलटने का है

पिछले कुछ दशकों में इंसान ने जो तरक़्क़ी की है, उतनी तरक़्क़ी पिछली कई सदियों में भी नहीं हुई। भौतिक सुख-सुविधाओं से सुसज्जित जीवन, संचार के ऐसे साधन कि इंसान घर बैठे पूरी दुनिया की सैर कर ले, कई दिनों में पूरे होने वाले सफ़र चंद घंटों में पूरे कर ले, वग़ैरह-वग़ैरह। इन सुविधाओं ने इंसान की ज़िंदगी को बहुत आसान बना दिया। इंसान की इस तरक़्क़ी से जहां बहुत-से फ़ायदे हुए, वहीं यह हादसा भी हुआ कि इंसान स्वयं को "सर्वशक्तिमान" समझने लगा। वह यह भूल गया कि उसके ऊपर भी कोई शक्ति है जो इस पूरे ब्रह्माण्ड को नियंत्रित करती है। वह भौतिकवाद के नशे में स्वार्थी और लालची भी होता चला गया।

वैश्वीकरण ने देशों को तो आपस में जोड़ दिया लेकिन इंसान, इंसान से दूर होता चला गया। मानव संवेदनाएं लकवाग्रस्त होती चली गईं लेकिन सिर्फ़ भूल जाना



ही इंसान की प्रकृति का हिस्सा नहीं है, बल्कि इंसान की विशेषता यह भी है कि वह कुछ हादसों या घटनाओं को देखकर भूले हुए सबक़ भी याद करने लगता है, उसे अपने कमज़ोर होने का एहसास होने लगता है।

बीते साल से पूरी दुनिया के लिए कठिन परीक्षा का जो दौर शुरू हुआ है, वह अभी तक जारी है। यह पूरी मानवजाति की संवेदनशीलता, सहनशीलता और विवेकशीलता की परीक्षा का दौर है। यह मनुष्य की कल्पनाओं से भी परे था कि हवा की गति से दौड़ती ज़िंदगी यूं थम जाएगी और दूसरे ग्रहों पर जीवन तलाश करने वाला इंसान, ख़ुद अपनी पृथ्वी पर इस क़दर बेबस व असहाय हो जाएगा।




कोविड-19 की दस्तक देखते ही देखते एक महामारी का रूप धारण करने लगी और कई देशों ने सम्पूर्ण लॉकडाउन घोषित कर दिया। अब मानवजाति के सामने कोरोना महामारी के साथ-साथ तालाबंदी में जीवन-यापन की चुनौती भी थी। भारत में मार्च 2020 के अंतिम सप्ताह में देशव्यापी लॉकडाउन की घोषणा कर दी गई। अचानक हुई इस तालाबंदी ने देश को एक और महामारी की तरफ़ धकेल दिया और हर आने वाला दिन लोगों के लिए समस्याओं में इज़ाफ़ा करता गया। देश-भर से भयानक और मार्मिक तस्वीरें आने लगीं, और इन तस्वीरों ने देश की आंतरिक स्थिति की पोल खोलकर रख दी।

लॉकडाउन के दौरान हमें एहसास हुआ कि हम कितने सामाजिक, व्यवस्थित और जागरूक हैं! शासन व प्रशासन के बड़े-बड़े दावों और विकास की कहानियों में कितनी सच्चाई है! अप्रैल 2021 में जब कोविड की दूसरी लहर आई तो यह किसी क़यामत के आने से कम नहीं था। हमने देखा कि किस तरह पूरा देश इस महामारी के सामने बेबस हो गया। इंसान ने अपने चारों तरफ़ मौत का ऐसा तांडव देखा कि कलेजे मुंह को आ गए। हर दूसरे या तीसरे घर में मातम का माहौल पसरा हुआ था। यह भी हुआ कि लोगों ने लोगों से दूरी बना ली, कई जगह तो अपने घर के लोगों की लाश को भी लेने से लोगों ने मना कर दिया।

हादसे जहां एक तरफ़ तबाही मचाते हैं, वहीं दूसरी तरफ़ इंसान के विवेक को भी झिंझोड़ते हैं, इंसानी समाज के प्रति उसके उत्तरदायित्व का एहसास उसे कराते हैं, सर्वशक्तिमान ईश्वर की तरफ़ उसके दिल के झुकाव का ज़रिया बनते हैं, वो ईश्वर की इस पुकार को सुनते हैं कि "क्या लोगों के लिए अब भी वक़्त नहीं आया कि वे ईश्वर को याद करें, उसके उतारे हुए सत्य से उनके दिल पिघलें और वे ईश्वर के आगे झुक जाएं?" इसीलिए ये मंज़र भी हमने देखे कि अपनों के ठुकराए हुए लोगों को दूसरों ने सहारा दिया, मानवता की सेवा करने वालों की संख्या भी इस महामारी के दैरान बहुत तेज़ी से बढ़ी, लोग धर्मों के भेद से ऊपर उठकर एक दूसरे का सहारा बनते देखे गए, मरीज़ों को अस्पताल पहुंचाने के लिए, दवाओं का इंतज़ाम करने के लिए, लोगों के घरों में ऑक्सीजन सिलेंडर ले जाने के लिए, राशन बांटने के लिए कई सामाजिक संगठन और व्यक्ति आगे बढ़े, नफ़रतों को दम तोड़ते हुए और लोगों को पश्चाताप करते हुए भी देखा गया।

इस महामारी ने जो भयानक स्थिति पैदा की, उसका तक़ाज़ा यही है कि हम अपने पालनहार की पुकार सुनें, हमें अपने सृजनकर्ता की तरफ़ पलटना चाहिए, ताकि हमारे दिल नर्म हों, इस तबाही से लड़ने, इससे जो नुक़सान हुए हैं उन्हें सहने और उनकी भरपाई करने की हिम्मत हमें मिले, समाज के बिखरे ताने-बाने फिर से हम जोड़ सकें, रिश्तों को क़रीब ला सकें, पवित्र क़ुरआन में ये बात कही गई है कि अगर इंसान ख़ुदा को याद रखे तो ख़ुदा भी उसको याद रखता है, वो अपने बंदों की क़द्र करता है, ये वक़्त ख़ुदा को याद करने और उसकी तरफ़ पलटने का है। ■■



**सौंदर्य बोध**



**संपादन प्रभाग**

# अपने रब को पहचानो

आज हमारी सबसे बड़ी आवश्यकता यह है कि हम अपने रब को पहचानें, क्योंकि वही हमारा स्रष्टा है, पूज्य प्रभु है, पालनहार है। वही हम सबका रब है। वह बड़ा उदार है, वही आजीविकादाता है। वही न्याय के दिन का मालिक है, वही सर्वोत्तम सहायक और संरक्षक है। वही सर्वशक्तिमान है और केवल वही उपास्य है। क़ुरआन के शब्दों में "हुक्म और आधिपत्य तो बस ईश्वर का है। उसने आदेश दिया है कि उसके सिवा किसी की बंदगी न करो। यही सीधा और सत्य धर्म है।"



ईश्वर ही हमारी जीवन यात्रा की मंज़िल है। हमें उसके पास पहुंचना है। यदि हम उसके बताए मार्ग पर चलेंगे तो अमर जीवन प्राप्त होगा, जहां न कोई शोक होगा और न कोई भय। ईश्वर के सामीप्य में हमें वह सब कुछ प्राप्त होगा जिसकी हम कामना करते हैं। वहां कामना की भी कामना पूरी होगी। वहां वह अमृत वर्षा होगी जिसकी हम कल्पना भी नहीं कर सकते किंतु प्रभु की यह कृपा उन्हीं लोगों पर होगी जो उसके पास होंगे। नेक और भले होंगे। अतः हमें अपने वर्तमान जीवन से अपनी पात्रता का प्रमाण प्रस्तुत करना है। इस जीवन का वास्तविक उद्देश्य यही है। यह अपने जीवन के साथ दुर्व्यवहार है कि आदमी उससे उसका सौंदर्य और उसकी गरिमा छीन ले और भोग-विलास एवं मर्यादाहीन जीवन ही को सब कुछ समझ बैठे एवं अपने प्रभु की अपार कृपा और उसके सामीप्य से अपने को वंचित करके नर्क में जा पड़े। स्पष्ट है कोई भी इंसान यह नहीं चाहेगा।

ईश्वर के दिखाए हुए मार्ग पर चलने का अर्थ यह कदापि नहीं होता कि आदमी संसार को छोड़कर जंगल

अपने रब को पहचानने वाला चरित्रवान होगा, सच्चा होगा और हर प्रकार की संकुचित दृष्टि से मुक्त होगा। उसका हृदय इतना विशाल होगा कि वह सारे संसार के हित के लिए सोच सके और जगत के सारे लोगों को समान दृष्टि से देख सके। सबके लिए उसके दिल में करुणा, दया और प्रेम हो। वह इसके लिए विकल हो कि काश सारा संसार अपने रब को पहचानता और अपने रब के मार्ग पर चलता। क़ुरआन में है "अल्लाह का रंग ग्रहण करो, उससे अच्छा रंग किसका हो सकता है?"

में चला जाए और न इसका अर्थ यह होता है कि आदमी अपनी लौकिक ज़िम्मेदारियों को भूल जाए।

ईश्वर के दिखाए हुए मार्ग पर चलने का अर्थ यह है कि लोक और परलोक दोनों के बीच सामंजस्य स्थापित करते हुए सत्य मार्ग पर अग्रसर हुआ जाए। इसलिए अपने रब को पहचान लेने से हमें वह शक्ति और बल प्राप्त होता है जिसका साधारणतया अनुमान भी नहीं किया जा सकता।

अपने रब को पहचानने वाला चरित्रवान होगा, सच्चा होगा और हर प्रकार की संकुचित दृष्टि से मुक्त होगा। उसका हृदय इतना विशाल होगा कि वह सारे संसार के हित के लिए सोच सके और जगत के सारे लोगों को समान दृष्टि से देख सके। सबके लिए उसके दिल में करुणा, दया और प्रेम हो। वह इसके लिए विकल हो कि काश सारा संसार अपने रब को पहचानता और अपने जीवन में बदलाव लाकर उसके मार्ग पर चलता। क़ुरआन में है "अल्लाह का रंग ग्रहण करो, उससे अच्छा रंग किसका हो सकता है?"

एक जगह कहा गया है, "जान लो! दिलों को चैन और आराम अल्लाह की याद ही से मिलता है।" क़ुरआन में स्पष्ट शब्दों में यह शिक्षा दी गई है "लोगों के साथ उपकार कर, जिस प्रकार अल्लाह ने तेरे साथ उपकार किया है और धरती में बिगाड़ पैदा करने की कोशिश न कर, अल्लाह बिगाड़ पैदा करने वालों को पसंद नहीं करता।" वास्तव में लौकिक जीवन पर राज़ी और संतुष्ट हो जाना बेहौसले की बात है।

ईश्वर ने हमें शाश्वत जीवन की शुभ सूचना दी है और यह आदेश दिया है कि हम उसके योग्य बनने का प्रयास करें अब आप सोच सकते हैं कि वे लोग कितने घोर अंधकार में हैं जो ईश्वर की उस स्कीम और योजना से ही अनभिज्ञ हैं जो उसने उनके लिए बनाई है। निष्कर्ष ये है कि रब को पहचानने का अर्थ यह होता है कि लोग–

• जीवन के रहस्य को समझें।

• अपने रब के आदेशों का शुद्ध हृदय से पालन करें। अपने हृदय को शुष्क न रहने दें, उसमें प्रेम जगाएं।

• प्रभु से हमारा प्रेम का संपर्क हो और लोगों के प्रति हमारे हृदय में सहानुभूति और करुणा हो, कहीं भी और कभी भी छल-कपट से काम न लें।

• ज़ुल्म व अत्याचार और शोषण को समाप्त करें, सबको समान रूप से आगे बढ़ने के अवसर प्राप्त हों, इसकी चेष्टा करें।

• हर प्रकार के भेदभाव को मिटाएं और लोगों को इससे अवगत कराएं कि महान वह है जो ईश्वर को पहचानता है और उससे प्रेम करता एवं उसका डर रखता है और उसके दिखाए मार्ग पर चलता है। ■■






# नवपूंजीवाद का घृणित खेल और तमाशबीन लोकतंत्र

मुख्य स्तंभ



जुनैद अली

वैश्विक स्तर पर अवैध संपत्तियों की ख़रीद-फ़रोख़्त, वित्त अनियमितताओं और अघोषित निवेशों से जुड़े ख़ुलासों में राष्ट्रीय तथा अंतर्राष्ट्रीय हस्तियों की संलिप्तता की ख़बरें समय-समय पर निरंतर आती रही हैं। पूर्व में फिनसेन फ़ाइल्स, पैराडाइज पेपर्स, पनामा पेपर्स और लक्सलीक्स के ख़ुलासे ने अवैध संपत्तियों की ख़रीद-फ़रोख़्त और अघोषित निवेशों के संबंध में वित्तीय मामलों से जुड़े बड़ी अनियमितताओं को उजागर किया था। वर्तमान परिप्रेक्ष्य में पैंडोरा पेपर्स लीक को लेकर दुनिया में हड़कंप मचा हुआ है जिसके रडार में कई अंतर्राष्ट्रीय नामी-गिरामी हस्तियों के अक्स तैरते हुए दिख रहे हैं।

वैश्विक स्तर पर पैंडोरा पेपर्स अब तक की वैश्विक स्तर पर की गई सबसे बड़ी संयुक्त मीडिया का खोजी अभियान है और इस संयुक्त अभियान में 117 देशों के 150 से कहीं अधिक मीडिया संस्थानों के 600 से अधिक पत्रकारों के समूह ने वित्तीय कुप्रबंधन की परतें खोलने की साहसिक साझा अभियान को अंजाम दिया है। पैंडोरा पेपर्स लीक वित्तीय दस्तावेज़ों की एक लंबी फ़ेहरिस्त है जिसमें 1.2 करोड़ दस्तावेज़ लीक हुए हैं और लगभग 29,000 ऑफ़शोर कंपनियों और न्यासों से जुड़ी स्वामित्व के मामलों का लेखा-जोखा सामने आए हैं।

पैंडोरा पेपर्स वित्तीय पड़ताल 'इंटरनेशनल कॉसोर्टियम ऑफ़ इन्वेस्टिगेटिव जर्नलिस्ट्स (आईसीआईजे)

की अगुवाई में की गई यह सबसे बड़ी पड़ताल है। वर्ष 2016 में 'पैंडोरा पेपर्स' की ही तरह 'पनामा पेपर्स' जारी किए गए थे, जिनका संकलन इसी पत्रकार समूह ने किया था। पैंडोरा पेपर्स लीक में 64 लाख दस्तावेज़, लगभग 30 लाख इमेजेस, 10 लाख से अधिक ईमेल और लगभग पांच लाख स्प्रेडशीट को दुनिया के विभिन्न हिस्सों से एकत्रित किया गया है। आईसीआईजे ने अपने खोजी अभियान में जो सामग्री जमा की है उनमें 1970 के दशक के दस्तावेज़ भी शामिल है, लेकिन अधिकतर दस्तावेज़ वर्ष 1996 से 2020 के बीच के हैं।

लीक के संबंध में जो जानकारी सामने आई है उसके अनुसार 'बीबीसी पैनोरामा ने ब्रितानी अख़बार द गार्जियन और अन्य मीडिया संस्थानों के साथ मिलकर 1.2 करोड़ दस्तावेज़ों को हासिल किया है' पड़ताल में हासिल किए गए दस्तावेज़ स्विट्ज़रलैंड, पनामा, ब्रिटिश वर्जिन आईलैंड, संयुक्त अरब अमीरात, बेलीज़, साइप्रस और सिंगापुर जैसे देशों के 14 वित्तीय सेवाएं प्रदाता कंपनियों से लीक हुए हैं। इंडियन एक्सप्रेस पैंडोरा खोजी अभियान का हिस्सा रही है, उसने लिखा है कि "पैंडोरा पेपर्स दिखाते हैं कि धन-मशीन दुनिया के हर हिस्से में सक्रिय है।

अमेरिका समेत दुनिया के सबसे अमीर देशों की वित्तीय राजधानियां भी इनमें शामिल हैं। अमेरिका और यूरोप में स्थित वैश्विक बैंक, वकालत कंपनियां और अकाउंटिंग फर्म भी इस व्यवस्था को मदद करते हैं। मिसाल के तौर पर पैंडोरा पेपर्स से पता चला कि दुनिया भर के बैंकों ने पनामा की एक वकालत कंपनी एल्कोगल की मदद से कम से कम 3,926 ग्राहकों के लिए विदेशों में कंपनियां स्थापित कीं। इस कंपनी के दफ़्तर न्यूज़ीलैंड, उरुग्वे और यूएई में भी हैं और इस कंपनी ने ब्रिटिश वर्जिन आईलैंड्स अमेरिकी बैंक मॉर्गन स्टैनली के आग्रह पर 312 कंपनियां बनाई।

आईसीआईजे ने जो जानकारी साझा की है उस आधार पर अभी तक उजागर मामले में अघोषित निवेशों से जुड़े अंतर्राष्ट्रीय स्तर के जो बड़े राजनीतिज्ञों या उनसे जुड़े लोगों के चेहरे सामने आएं हैं उनमे जॉर्डन के शाह,अज़रबैजान के राष्ट्रपति का परिवार, चेक गणराज्य के प्रधानमंत्री आंद्रे बबीस, कीनियाई राष्ट्रपति उहुरू कीनियाटा, श्रीलंका के राष्ट्रपति गोटाबाया राजपक्षे की भतिजी, रुस के राष्ट्रपति पुतिन के सहयोगी कोनस्तानतिन अर्नेस्ट, पाकिस्तान के वित्त मंत्री शौकत तरीन, जल संसाधन मंत्री मूनिस इलाही, सीनेटर फैसल वावड़ा, उद्योग और उत्पादन मंत्री खुसरो बख्तियार के परिवार, दुनिया के विभिन्न हिस्सों से कई जानीमानी हस्तियों की लंबी फेहरिस्त है।

पैंडोरा पेपर्स की पड़ताल में भारत भी अछूता नहीं रहा है बल्कि अघोषित निवेशकों और ऑफ़शोर कंपनियां स्थापित करने के मामले में 300 से भी अधिक भारतीयों के नाम शामिल हैं जिनमें उद्योगपति अनिल अंबानी, पूर्व भारतीय क्रिकेटर सचिन तेंदुलकर, अनिल कुंबले, पीएनबी घोटाले के प्रमुख आरोपी नीरव मोदी और उनकी बहन, बिजनेस पर्सन किरण मजूमदार शॉ, अभिनेता जैकी श्रॉफ, कांग्रेस से जुड़े सतीश शर्मा, कॉर्पोरेट लॉबिस्ट नीरा राडिया भी लीक का हिस्सा हैं और






कई अन्य हस्तियों के नाम भी शुमार है। आईसीआईजे के लीक हुए रिकॉर्ड्स के अनुसार रिलायंस एडीए ग्रुप के चेयरमैन अनिल अंबानी और उनके करीबियों के पास कम से कम 18 ऑफ़शोर कंपनियां थीं और स्थापित इन कंपनियों में से सात कंपनियों ने वर्ष 2007 से 2010 के बीच उधार लिया है और कम से कम 1.3 बिलियन डॉलर का निवेश किया था। जबकि इस रिपोर्ट में इस बात का ज़िक्र किया गया है कि सचिन तेंदुलकर ने पूर्व में हुए पनामा पेपर्स लीक के तीन महीने बाद वर्जिन आइलैंड में स्थित अपनी संपत्ति को बेचने का प्रयास किया था।

पैंडोरा पेपर्स के अघोषित वित्तीय लेनदेन के उजागरों में बड़े रूप में ऑफ़शोर कंपनियों का ज़िक्र किया गया है जिस पर पूरा खोजी अभियान बहुत हद तक केन्द्रित है। ऑफ़शोर कंपनियों का आशय यह है कि दुनिया के किसी देश में किसी की संपत्ति है लेकिन इस संपत्ति पर मालिकाना हक़ किसी दूसरे देश की कंपनियों के ज़रिए लिया जाता है तो इस प्रकार की कंपनियों को 'ऑफ़शोर कंपनी' के रूप में देखा जाता हैं। वैश्विक सतह पर 'ऑफ़शोर कंपनियों' के उपयोग को अवैध नहीं माना जाता है,लेकिन एक बड़ी अहम सच्चाई यह भी है कि ऑफ़शोर कंपनियों की आड़ में अघोषित संपत्तियों तथा गुप्त निवेशों को छिपाने का प्रयास बड़े स्तर पर होता रहा है। ऑफ़शोर कंपनियों की स्थितियां अपने आप में बहुत ही जटिल होती है और अधिकांशतः कंपनियाँ गुमनाम होती हैं, कंपनी पर किसका स्वामित्व है और कंपनी में कितनी पूंजी झोंकी गई है, इसका सीधे तौर पर पता लगाना बेहद मुश्किल होता है।

अधिकतर ऑफ़शोर कंपनियां उन्हीं देशों में स्थापित की जाती है जिन देशों में वित्तीय संबंधित क़ानून बहुत उदार होते हैं, जहां कंपनियों की स्थापना बहुत सरल, कॉरपोरेशन टैक्स या तो बहुत कम या इससे पूरी तरह से छूट मिलती है और क़ानूनी संरक्षण ऐसा होता है कि किसी के लिए कंपनियों के मालिक की पहचान और उनके द्वारा निवेश की गई रकम की जानकारी इकट्ठा करना बेहद मुश्किल होता है। आम शब्दों में जिन मुल्कों में इस तरह की रियायत कंपनियों को हासिल है उन्हें 'टैक्स हैवेन' वाले देश के नाम से ख्यातिप्राप्त है।कैमन आइलैंड, ब्रिटिश वर्जिन आइलैंड, स्विट्ज़रलैंड और सिंगापुर जैसे देशों में ऑफ़शोर कंपनियों के संबंध में माकूल स्थिति मानी जाती है। हालांकि पनामा पेपर्स लीक के बाद अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर इस बात की आवश्यकता महसूस की गई कि ऐसे क़ानूनी प्रावधान निश्चित होने चाहिए जिससे कि राजनेताओं के लिए टैक्स से बचना या अघोषित संपत्तियों पर पर्दा डालना मुश्किल हो जाएं लेकिन पैंडोरा पेपर्स लीक के सामने आने का सीधा मतलब यही है कि जब बाड़ ही खेत निगलने लगता है तब सारे क़ानूनी प्रावधान बेमानी होकर रह जाते हैं।

ऑफ़शोर कंपनियों के द्वारा मुखौटा कंपनियों में निवेश के संबंध में आईसीआईजे ने यह अनुमान लगाया है कि पूरी दुनिया में शैल कंपनियों में 5.6 ट्रिलियन डॉलर से लेकर 32 ट्रिलियन डॉलर तक का निवेश हो सकता है, वहीं अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष का कहना है कि टैक्स हैवेन के इस्तेमाल से दुनिया भर में सरकारों को प्रतिवर्ष 600 अरब डॉलर के टैक्स का घाटा होता है। लीक के संबंध में यूरोप की ग्रीन पार्टी की सांसद स्वेन गीगोल्ड ने कहा, 'लीक हुए नए आंकड़ों के बाद सभी को सतर्क हो जाना चाहिए, वैश्विक स्तर पर होने वाली

**साफ़ शब्दों में कहा जाए तो यह कर अपवंचन का पूरा खेल ग़रीबों के वास्तविक हकों पर डाका डालने के समान है। आर्थिक असमानताओं को वैश्विक पटल पर साझा करने वाली संस्था 'ऑक्सफ़ैम इंटरनेशनल' ने भ्रष्ट लोगों के लालच को उजागर करने के लिए पैंडोरा पेपर्स की सराहना की है। ऑक्सफ़ैम के हवाले से कहा गया है कि इस लालच के प्रभावों में किए गए टैक्सों की चोरी के कारण देशों के कर के माध्यमों से होने वाली आय में धन का नुकसान होता है,जिसका उपयोग गरीबों की भलाई के कार्यक्रमों और परियोजनाओं के वित्तपोषण के रूप में किया जा सकता था।**

कर की चोरी से वैश्विक स्तर पर आर्थिक असमानता को बढ़ावा मिलता है,हमें इससे निपटने के प्रयासों को विस्तार देने की आवश्यकता है। इसमें कोई संदेह नहीं है कि विकासशील और तीसरी दुनिया के लोगों पर राजनेताओं और पूंजीपतियों द्वारा की गई टैक्सों की चोरी का गंभीर प्रभाव पड़ता है और उनके सामने मूलभूत सुविधाओं को लेकर संघर्ष की स्थिति बन जाती है।

दुनिया के अधिकांश देशों के लिए पैंडोरा पेपर्स लीक के तहत उजागर रिपोर्ट इसलिए अत्यंत चिंता का विषय हैं क्योंकि लीक रिपोर्ट में दुनिया के 90 देशों के 330 से भी अधिक प्रभावशाली राजनीतिज्ञ भी शुमार हैं, जिन पर मुखौटा कंपनियों और न्यासों के जरिए अपनी लाखों डॉलर की बेनामी संपत्तियों को छुपाने के गंभीर आरोप है। पैंडोरा लीक में जिन लोगों के नाम सामने आए हैं, उनमें से कुछ लोग पहले से ही धन शोधन और टैक्स घोटाले जैसे आरोप झेल रहे हैं। लेकिन यह अत्यंत खेदजनक स्थिति रही है कि अमीर और शक्तिशाली लोग क़ानूनी तौर पर कंपनियां बनाकर विदेशों में धड़ल्ले से संपत्तियां ख़रीद रहे हैं। दस्तावेज़ों के मुताबिक़ इन ख़रीदारियों के पीछे 95,000 ऑफ़शोर विदेशी कंपनियां हैं। वास्तविकता यही है कि व्यापक और सुनियोजित तरीक़े से टैक्सों की चोरी सीधे तौर पर संबंधित देशों की कर के माध्यम से होने वाली आय को प्रभावित करती है, जिसके केन्द्र में देश की ग़रीब जनता रहती है। साफ़ शब्दों में कहा जाए तो यह कर अपवंचन का पूरा खेल ग़रीबों के वास्तविक हकों पर डाका डालने के समान है। आर्थिक असमानताओं को वैश्विक पटल पर साझा करने वाली संस्था 'ऑक्सफ़ैम इंटरनेशनल' ने भ्रष्ट लोगों के लालच को उजागर करने के लिए पैंडोरा पेपर्स की सराहना की है। ऑक्सफ़ैम के हवाले से कहा गया है कि इस लालच के प्रभावों में किए गए टैक्सों की चोरी के कारण देशों के कर के माध्यमों से होने वाली आय में धन का नुकसान होता है,जिसका उपयोग गरीबों की भलाई के कार्यक्रमों और परियोजनाओं के वित्तपोषण के रूप में किया जा सकता था। ऑक्सफ़ैम ने अपने एक बयान में यह भी कहा है कि इसी के कारण अधिक अस्पताल नहीं बन पाए और धन की कमीं से उन शिक्षकों एवं दमकलकर्मियों और लोक सेवकों के वेतन का प्रबंध नहीं हो पाया,

**दुनिया भर की सरकारें हर लीक्स पर जांच, दोषियों को सजा और सख़्त क़ानूनी प्रावधान निश्चित किए जाने का संकल्प दोहराती हैं लेकिन पूंजीपतियों पर ठोस कार्रवाई से बचती रही हैं, क्योंकि इस बात का अंदेशा जताया जाता रहा है कि अघोषित निवेश करने वालों से ही बड़े पैमाने पर राजनीतिक पार्टियों को चंदे की रक़म भी मिलती है।**

जिनकी हमें आवश्यकता है। जब कोई नेता या कारोबारी दावा करता है कि जलवायु परिवर्तन और नयी पद्धति, अधिक एवं बेहतर नौकरियों, कोविड-19 से उबरने में मदद करने और विदेशों को सहायता देने के लिए धन नहीं है, तो इसका कारण यही लालच है।

भारत सरकार ने लीक हुए पैंडोरा पेपर्स की जानकारियों को अपने संज्ञान में लेते हुए विभिन्न एजेंसियों से जांच की बात कही है। भारतीय विदेश मंत्रालय ने कहा है कि दोषी पाए जाने वाले लोगों के ख़िलाफ़ नियमानुसार उचित कार्रवाई की जाएगी। विदेश मंत्रालय के मुताबिक़, जो मामले सामने आए हैं उनकी प्रभावी जांच सुनिश्चित करने के लिए सरकार इन करदाताओं अथवा संस्थाओं के संबंध में जानकारी प्राप्त करने के लिए विदेशी क्षेत्राधिकारों के साथ भी मिलकर काम करेगी। यह स्पष्ट है कि देश में आर्थिक घोटालों, भ्रष्टाचार और ब्लैक मनी से जुड़े मामलों की लंबी फेहरिस्त है लेकिन बहुत ही कम मामलों में जांच अंतिम निष्कर्ष पर पहुंचते हुए दोषियों को सजा दिलवाने में सफल साबित हो सकी। मौजूदा सरकार ने पूर्व में ब्लैक मनी की वापसी, अघोषित निवेशों पर सख़्त क़ानून और दोषियों को कठोर सज़ा को अपना सियासी मुद्दा बनाते हुए देश की जनता को सुनहरे सपने दिखाए थे लेकिन वास्तविकता यही है कि पूरी कवायद वादों से ज़मीन पर उतरने में नाकाम रही है।

निरंतर होने वाले अघोषित निवेशों की लीक्स को लेकर यह स्पष्ट है कि वैश्विक स्तर पर उन व्यावहारिक क़ानूनों की कमी है जो संपत्तियां बनाने की हवस पर लगाम लगा सकें। दुनिया भर की सरकारें हर लीक्स पर जांच, दोषियों को सजा और सख़्त क़ानूनी प्रावधान निश्चित किए जाने का संकल्प दोहराती हैं लेकिन पूंजीपतियों पर ठोस कार्रवाई से बचती रही हैं, क्योंकि इस बात का अंदेशा जताया जाता रहा है कि अघोषित निवेश करने वालों से ही बड़े पैमाने पर राजनीतिक पार्टियों को चंदे की रक़म भी मिलती है। इसमें कोई संदेह नहीं है कि अघोषित निवेशों से केवल राष्ट्रीय आय ही नहीं प्रभावित होती है बल्कि ब्लैक मनी निवेशकों और सरकार के बीच मज़बूती से चलने वाले नेक्सस से गरीबों के मुंह से निवाला छिनता हुआ दिखने के साथ लोकतांत्रिक व्यवस्था भी अपने मूल सिद्धांतों से भटकती हुई प्रतीत होती है। ■■



दर्शन



ख़ुर्शीद अहमद



# इस्लाम में मालदारी या ग़रीबी?

इस्लाम ने हमेशा मालदारी को ग़रीबी से बेहतर माना है। हज़रत मुहम्मद (सल्ल.) ने हमें जो दुआएं सिखाई हैं उनमें ग़रीबी फ़क़ीरी व मोहताजी से बचने की दुआएं शामिल हैं पर एक भी दुआ मालदारी से बचने की नहीं है।

क़ुरआन कहता है कि जब जुमा की नमाज़ से फ़ारिग़ हो जाओ तो ज़मीन पर फैल जाओ और रिज़्क़ (रोज़ी- रोटी) तलाश करो। क़ुरआन इसके लिए मेहनत करने को कहता है।

मालदारी बुरी चीज़ नहीं है बस कुछ शर्तों के साथ–

1. हलाल तरीक़े से कमाई गई हो।
2. सही और जायज़ तरीक़े से ख़र्च की जाए।
3. माल व धन में ग़रीबों व कमज़ोरों का हक़ निकाला जाए अर्थात् ज़कात व ख़ैरात अदा की जाए।
4. धन इकट्ठा किया जाए पर उसे सर पर सवार न किया जाए कि उसके लिए सब कुछ भुला दिया जाए।
5. माल व दौलत की पूजा व इबादत न की जाए।
6. माल को फ़िज़ूल ख़र्च न किया जाए और न ही कंजूसी की जाए, बल्कि ख़र्च करने में बीच का रास्ता अपनाया जाए।

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि एक ईमानदार व्यापारी क़यामत के दिन नबियों और सिद्दीक़ों के साथ होगा।

आप (सल्ल.) ने हज़रत साद बिन अबी वक़ास से फ़रमाया कि तुम अपने पीछे धन छोड़कर जाओ यह बहुत बेहतर है इससे कि तुम्हारे जाने के बाद तुम्हारे

बाल-बच्चे लोगों के सामने हाथ फैलाएं इसलिए हम मुसलमानों के लिए ज़रूरी है कि हम आर्थिक सशक्तिकरण के लिए भरपूर मेहनत करें।

### इस्लाम के साथ ग़रीबी जोड़ने की वजह

भारतीय उपमहाद्वीप में इस्लाम सूफ़ियाने किराम के ज़रिए आया, वह लोग दुनिया की लालच से दूर अपने ख़ानकाहों में रहते थे, दुनिया से अपना मोह त्याग चुके थे। उनसे प्रभावित होकर मुसलमानों में यह बात फैल गई कि ग़रीबी अच्छी चीज़ है जो कम से कम दुनिया में मशग़ूल होगा उसे क़यामत में कम से कम हिसाब देना होगा और वह कामयाब रहेगा।

उलमा ने अपनी तक़रीरों व लेखों के ज़रिए अल्लाह के रसूल (सल्ल.) और सहाबा किराम की ग़रीबी के क़िस्से बड़े अच्छे अंदाज़ में बयान किए ख़ासतौर पर हज़रत अली (रज़ि.) की ग़ुरबत और माल व दौलत से उनकी दूरी को बयान किया गया। पैवंद लगे कपड़े और पेट पर पत्थर वाली छवि पेश की गई, इससे आम लोगों में यह तालीम गई कि ग़रीबी ज़्यादा अच्छी चीज़ है और इस्लाम ग़रीबी को पसन्द करता है। वह चाहता है कि उसके चाहने वाले आर्थिक तौर पर कमज़ोर रहें और पूरा ध्यान आख़िरत की ज़िंदगी पर लगाएं , लेकिन क्या सच में ऐसा है? नहीं, इस्लाम ने ग़रीबी को पसंद नहीं किया है और न ही उसे प्राथमिकता दी है। इस्लाम अपने मानने वालों को आर्थिक रूप से मज़बूत देखना चाहता है।

अल्लाह के रसूल (सल्ल.) जब मक्का से हिजरत करके मदीना आए तो ख़ाली हाथ थे मोहाजिरीन का सब कुछ मक्का वालों ने छीन लिया था, मदीना के अंसार भी ग़रीब किसान थे और फिर इन्हें चैन से बैठने भी नहीं दिया गया। पै-दर-पै इन

**हज़रत अली (रज़ि.) की ग़रीबी को हमारे उलमा बड़े ही दर्दनाक अंदाज़ में बयान करते हैं उन्हें लोग अबुल अयताम कहने लगे थे यानी यतीमों के बाप, अल्लाह ने इतना नवाज़ा कि वह यतीम बच्चों की परवरिश की ज़िम्मेदारी संभालने लगे थे और इतनी बड़ी तादाद में यतीम बच्चों की किफ़ालत की कि लोगों ने उन्हें अबुल अयताम की उपाधि दे दी।**

पर जंगे लाद दी गईं, कमाने और सेट होने का मौक़ा भी नहीं मिला।

ऐसे समय में ज़िंदगी बहुत ग़ुरबत वाली गुज़री भूखे पेट भी सोना पड़ा, पैवंद लगे कपड़े भी पहनने पड़े, पेट पर पत्थर भी बांधना पड़ा, लेकिन यह सब हमेशा के लिए नहीं था कुछ वर्षों के लिए था बाद में इन लोगों ने मेहनत की, ख़ूब कमाया और ख़र्च किया। आर्थिक तौर पर मज़बूत हुए और ऐसा भी समय आया कि कोई ज़कात लेने वाला नहीं मिलता था। लोग ज़कात निकाल कर उस धन को देने के लिए ज़रूरतमंद ढूंढते थे और नहीं पाते थे।

हज़रत अली (रज़ि.) की ग़रीबी को हमारे उलमा बड़े ही दर्दनाक अंदाज़ में बयान करते हैं उन्हें लोग अबुल अयताम कहने लगे थे यानी यतीमों के बाप, अल्लाह ने इतना नवाज़ा कि वह यतीम बच्चों की परवरिश की ज़िम्मेदारी संभालने लगे थे और इतनी बड़ी तादाद में यतीम बच्चों की किफ़ालत की कि लोगों ने उन्हें अबुल अयताम की उपाधि दे दी।

अल्लाह के रसूल (सल्ल.) की तालीम थी कि ऊपर वाला हाथ यानी देने वाला हाथ नीचे वाले हाथ यानी लेने वाले हाथ से बेहतर है।

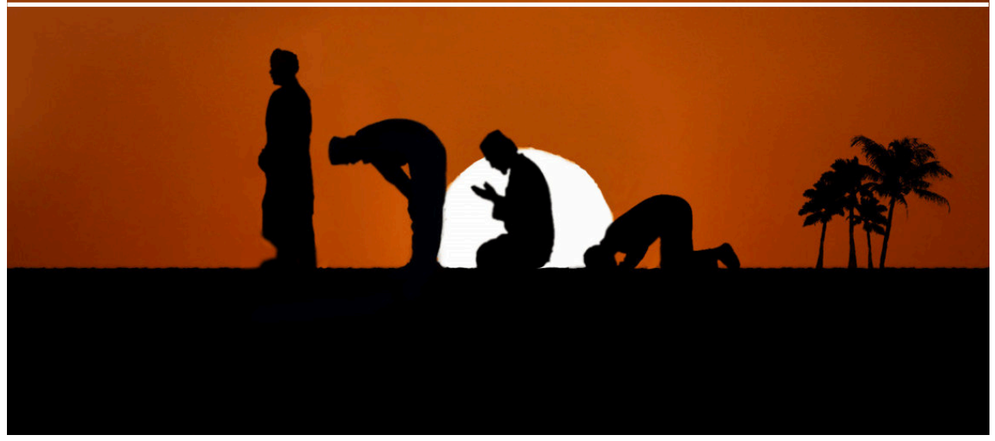
इस तालीम का नतीजा था कि लोग मेहनत करके कमाते थे ताकि कभी अपने किसी भाई के आगे हाथ न फैलाना पड़े।

### हलाल कमाई पर ज़ोर

इस्लाम हलाल तरीक़े से पैसा कमाने पर ज़ोर देता है, हराम रोज़ी से रोकता है, लेकिन कितना कमाया जाए इस पर कोई पाबंदी नहीं है। सहाबा किराम में कई लोग कहते थे कि काश मुझे उहद पहाड़ के बराबर सोना मिल जाए और मैं उसे अल्लाह के रास्ते में ख़र्च कर दूं। ज़ाहिर है कि उहद पहाड़ के बराबर भी आप सोना कमा लें तो बुरा नहीं है। भीख मांगने को इस्लाम बुरा जानता है वह भीख मांगने से रोकता है। अल्लाह के रसूल (सल्ल.) ने फ़रमाया कि जो भीख मांगता है क़यामत



**इस्लाम काम करने से पैसा कमाने से नहीं रोकता, बल्कि वह ख़ाली बैठने और बेरोज़गार रहने से रोकता है। अल्लाह के रसूल (सल्ल.)और हज़रत उमर जैसे बड़े लोग मेहनत करते थे, तो हम आप क्यों नहीं कर सकते।**



के दिन उसकी पेशानी पर लिखा होगा कि यह दुनिया में भीख मांगा करता था।

कमाई के जो भी मुनासिब तरीक़े हैं सब पसंदीदा हैं, सब अफ़ज़ल हैं चाहे व्यापार हो, नौकरी हो, कारीगरी हो, मज़दूरी हो, किसानी हो या जानवर पालना।

एक चीज़ मुसलमानों में मशहूर है कि सबसे अफ़ज़ल कमाई तिजारत है और इसके लिए वह कुछ हदीसों को पेश करते हैं, जबकि ऐसा नहीं है खेती-बाड़ी की भी बड़ी फ़ज़ीलत आई है। खेती-बाड़ी को कमाई के साथ-साथ सदक़ा भी कहा गया है। इसी तरह स्किल डेवलपमेंट के कामों और कारीगरी की कमाई को सबसे अफ़ज़ल कमाई कहा गया है कि हज़रत दाऊद ख़ुद एक कारीगर थे।

इस्लाम ख़ाली बैठकर इबादत करने के ख़िलाफ़ है। क़ुरआन में अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाता है कि–

जब नमाज़ से फ़ारिग़ हो जाओ तो ज़मीन में फैल जाओ और अल्लाह के फ़ज़्ल (रिज़्क़) को तलाश करो।

(सूरा अल-जुमा)

एक बार हज़रत उमर ने एक आदमी को देखा कि मस्जिद में इबादत में मशग़ूल हैं, आपने कुछ नहीं कहा आगे बढ़ गए। दूसरे दिन फिर देखा, जब तीसरे दिन देखा तो उसे टोका कि तुम हमेशा मस्जिद में ही क्यों नज़र आते हो उसने कहा कि ऐ अमीरुल मोमिनीन हम दो भाई हैं हम ने तय किया है कि एक भाई कमाएगा दोनों परिवारों का ख़र्च संभालेगा और दूसरा भाई अल्लाह की इबादत करेगा। आप ने उसे डांट कर भगाया कि जाओ तुम भी काम करो तुमसे अच्छा तुम्हारा भाई है जो कमा कर दोनों परिवारों को खिला रहा है और जितनी इबादत करनी चाहिए वह भी कर रहा है। इस मौक़े पर हज़रत उमर ने एक बात कही जो बाद में मुहावरा बन गया आपने कहा कि आसमान से सोना-चांदी नहीं बरसते।

ख़ुद हज़रत उमर जब मक्का से हिजरत करके मदीना आए तो अल्लाह के रसूल (सल्ल.) ने उन्हें एक अंसारी सहाबी का भाई बना दिया। हज़रत उमर अपने भाई पर बोझ नहीं बनें उनके साथ उनके खेत में काम करते थे, यहां तक कि हमारे रसूल (सल्ल.) ख़ुद अपने लिए ख़ाली बैठना पसंद नहीं करते थे। सफ़र में होते खाना बनाने का समय आता सब मिलकर खाना पकाते। सहाबा आप से कहते कि आप रहने दें हम कर लेंगे लेकिन आप तैयार नहीं होते। ज़्यादातर लकड़ी इकट्ठा करने का काम अपने ज़िम्मे ले लेते।

कुल मिलाकर इस्लाम काम करने से पैसा कमाने से नहीं रोकता, बल्कि वह ख़ाली बैठने और बेरोज़गार रहने से रोकता है। अल्लाह के रसूल (सल्ल.) और हज़रत उमर जैसे बड़े लोग मेहनत करते थे, तो हम आप क्यों नहीं कर सकते।

■■






संवेदना



डॉ. सलमान अरशद

# बुज़ुर्गों के प्रति कितना संवेदनशील है हमारा समाज ?

माँ◆बाप अपनी औक़ात भर बच्चों की बेहतर परवरिश करते हैं, उनको जीने के लिए तमाम कौशल सिखाते हैं। पूरी कोशिश करते हैं कि उनके पैर कमज़ोर हों, इससे पहले उनके बच्चे अपने पैरों पर मज़बूती से खड़े हो जाएं।

लड़कियां ब्याह कर औरों के घर भेज दी जातीं हैं और औरों की लड़कियां ब्याह कर बहू बना ली जाती हैं। इतना करते-करते मां-बाप बूढ़े हो जाते हैं, जॉब में हैं तो रिटायर भी।

अब बहू व बेटे के लिए वो बोझ हो जाते हैं। बुज़ुर्गों के लिए समाज या सरकार के पास कोई इंतज़ाम नहीं है। बुज़ुर्गों की सुरक्षा व सेहत किसी की भी ज़िम्मेदारी नहीं है। अक्सर बहू और बेटे के बीच लड़ाई की एक बुनियाद मां-बाप भी होते हैं। भाई एक से ज़्यादा हुए तो उनमें मां-बाप की ज़िम्मेदारी से भागने की लड़ाई भी एक अलग ही मसला है।

अक्सर ये सवाल बहुत परेशान करता है कि क्या वाक़ई बुज़ुर्ग अपने बच्चों के लिए बोझ होते हैं ? क्या जो बच्चे एक समय मां-बाप की जुदाई ज़रा भी देर के लिए बर्दाश्त नहीं कर पाते वही उन्हीं मां-बाप से क्या सच में बेजार हो जाते हैं? बहू जो अपने मां-बाप के इन्हीं हालात के लिए रोती है वही कैसे अपने पति के मां-बाप के लिए निष्ठुर हो जाती है? क्या सच में मां-बाप परिवार के लिए अनुपयोगी, अनुत्पादक होते हैं? इन्हीं सवालों पर विचार करेंगे और चाहेंगे कि आप भी अपने विचार रखें!

हम ये स्वीकार तो नहीं कर पाते

लेकिन सच्चाई यही है कि आर्थिक सुरक्षा हर तरह की सुरक्षा की गारंटी होती है। आपने देखा होगा कि जिन बुज़ुर्गों को पेंशन मिलती है, उनकी परिवार में थोड़ी बेहतर स्थिति होती है बनिस्बत उन बुज़ुर्गों के जिनकी कोई आमदनी नहीं होती। यानी बुज़ुर्गों को यहां जो सम्मान मिल रहा है वो उनके पैसों के कारण है न कि किसी संस्कार टाइप चीज़ के कारण। आज हर परिवार एक-एक पैसे को जोड़ता है, अक्सर लोगों के पास घर नहीं होते, होते हैं तो एक-एक कोना कलकुलेटेड होता है। बुज़ुर्गों के लिए भी एक कमरे का इंतज़ाम अतिरिक्त ख़र्चे के रूप में देखा जाता है। कई मामलों में बुज़ुर्ग बे-यारो मददगार गांव में होते हैं और बेटा शहर में नौकरी करता है। यानी आर्थिक हालात से तय होता है कि किसी परिवार में बुज़ुर्ग की क्या स्थिति होगी।

लेकिन जोधपुर में कुछ अमीर बेटों के लाचार मां-बाप से मिलने का मौक़ा मिला। इन बुज़ुर्गों को उनके अमीर बेटे बहुओं ने बेसहारा छोड़ दिया था। समाज के कुछ ज़िम्मेदार नागरिक उनकी देखभाल करते थे। अमीर औलादें अपने मां-बाप को हर सहूलत फ़राहम कर सकती हैं भले ही वो उन्हें वक़्त न दे पाएं, ऐसे में ये बात बहुत हैरान करती है कि उन्होंने अपने मां-बाप को बेसहारा क्यों छोड़ा होगा !

जयपुर में 2016 में एक ऐसे घर में कुछ रोज़ गुज़ारने का मौक़ा मिला जिसके एक हिस्से में एक बुज़ुर्ग रहते थे। ये बड़ी मुश्किल से टॉयलेट तक जा पाते थे, अक्सर तो बिस्तर पर ही पेशाब करते थे। उनका बेटा सप्ताह में एक बार आकर उनको नहलाता और कपड़े बदलता था। मेरे मित्र अक्सर बुज़ुर्ग की कुछ मदद कर देते, सफ़ाई तो रोज़ ही करते। जब ये बुज़ुर्ग मर गए तो अंतिम क्रियाओं के तौर पर सभी कार्यक्रम बड़े धूमधाम से किया गया। क्या ये प्रेम था ? इसी जगह एक घर से किसी के चीखने की आवाज़ आती थी, मित्र से पता करवाया तो मालूम चला कोई बुज़ुर्ग जो मानसिक संतुलन भी खो बैठे हैं, उन्हें उन्हीं की औलादें मारती थीं। ये इलाक़ा शहर का पॉश इलाक़ा कहलाता है, यानी ये थैली से अमीर लोग रहते हैं।

ऐसे ही एक बुज़ुर्ग औरत बिना किसी की मदद के अपने घर में मर गईं; उनका बेटा अपने बच्चों के साथ अमेरिका में था। ऐसे हज़ारों क़िस्से हैं। लेकिन सवाल वही के जो मां-बाप अपने बच्चों के लिए ज़मीन आसमान एक करते हैं, वही अपने मां-बाप को बोझ समझ कर कैसे फेंक देते हैं!

धर्म, समाज, नैतिकता सब बुज़ुर्गों की सेवा के लिए प्रेरित करते हैं, लेकिन सेवा या दुत्कार तय होता है पैसों की ताक़त से। अमीर के लिए भी मां-बाप बोझ लगते हैं क्योंकि उन पर समय और पैसा ख़र्च होता है। बहू के तौर पर एक स्त्री मां-बाप का तिरस्कार करती है तो बेटी के तौर पर सम्मान और सेवा, आख़िर एक स्त्री इन दो रूपों में कैसे जी पाती है ?

एक आवाज़ महिला जगत से उठती है कि बुज़ुर्गों की सेवा बहू ही क्यों करे बेटा क्यों नहीं। यहां दोनों के पक्ष और विपक्ष में कई तर्क दिए जा सकते हैं, मैं नहीं दूंगा। मेरा बस इतना कहना है कि शादी सिर्फ़ सेक्स और बच्चे पैदा करने की पार्टनरशिप नहीं है, बल्कि दो लोग दोनों के सुख-दुख और ज़िम्मेदारियों के साझेदार बनते हैं, अगर ऐसा नहीं है तो फिर शादी की भी क्या ज़रूरत?

जिस घर में बुज़ुर्ग होते हैं, अमूमन बच्चे बहुत सुरक्षित होते हैं। यही नहीं बच्चे बुज़ुर्गों के लिए टॉनिक का काम करते हैं। ये मैं मेरे अनुभव से कह रहा हूं, हो सकता है कि आपका अनुभव कुछ अलग हो।

बच्चों की बात आई तो थोड़ी-सी चर्चा इस पहलू पर कि समाज में बुज़ुर्ग ही नहीं बच्चे भी असुरक्षित हैं। जिन परिवारों में मां-बाप दोनों काम करते हैं वहां ऐसी कोई व्यवस्था नहीं है जिसमें बच्चे की अच्छी परवरिश हो पाए। पूंजीवादी समाज ने इसके लिए जो विकल्प निर्मित किये हैं, उनमें सुविधा जैसी भी हो प्रेम व संवेदना नहीं है, जबकि बच्चों के लिए प्रेमपूर्ण माहौल किसी भी दूसरी सुविधा से ज़्यादा ज़रूरी है। एक अंतिम बात, कल हम बच्चे थे तो आने वाले कल में हम बूढ़े भी होंगे। जो कुछ आज बच्चों और बूढ़ों को मिल रहा है, उससे बेहतर की उम्मीद आने वाले कल में करने का कोई आधार नहीं है, तो फिर उपाय क्या है ? कुछ अवधारणाओं पर शिद्दत से सोचना पड़ेगा, मसलन- मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है, तो मानुष्य का ज्ञान सामाजिक संपत्ति है, इस ज्ञान का उपयोग सामाजिक/ सामूहिक होना चाहिए। इसी तरह हमारे कौशल, हमारी सृजना समाज की ही संपत्ति है इसलिए हमारा अर्जन भी सामाजिक व सामूहिक होना चाहिए। अब मुनाफ़े पर आधारित सामाजिक व्यवस्था में सामूहिकता के लिए कोई जगह नहीं है। हमें एक ऐसा समाज चाहिए जिसमें मानव मेधा द्वारा अर्जित सम्पदा समाज की हो, जिसमें बच्चों का लालन-पालन और शिक्षा समाज की ज़िम्मेदारी हो, जिसमें बुज़ुर्गों की देखभाल, उनका इलाज और उनका मनोरंजन भी समाज की ज़िम्मेदारी में हो। ऐसा समाज फ़िलहाल नहीं है, पर क्या यही समाज हमारी ज़रूरत नहीं है?

■■





शिक्षा विमर्श



डॉ. अबरार मुल्तानी

# मत रहना स्कूल भरोसे

मुकेश अंबानी ने एक बार बताया था कि उनके पिता धीरूभाई अंबानी हमेशा से चाहते थे कि उनके बच्चे नए अनुभव, गतिविधियां और विचार सीखें: 'मुझे याद है कि मेरे पिता कभी भी हमारे स्कूल में नहीं आए, एक बार भी नहीं। यद्यपि वह हमारे ऑल राउंड विकास में ज़्यादा दिलचस्पी लेते थे। ज़रा सोचिए। साठ के दशक में उन्होंने अख़बार में शिक्षक के लिए एक विज्ञापन दिया था, जिसका मुख्य कार्य था ग़ैर-अकादमिक शिक्षण प्रदान करना; उन्हें बच्चों को सामान्य ज्ञान देना था।

'उन्होंने अनेक लोगों का साक्षात्कार लिया और उनमें से महेंद्रभाई व्यास को चुना, जो न्यू एरा स्कूल में पढ़ाते थे। महेंद्रभाई हर शाम उनके घर आते और 6.30 या 7 बजे तक ठहरते। उन्हें बच्चों के सामान्य ज्ञान पर ध्यान देना था। वे हॉकी, फुटबॉल और भिन्न प्रकार के खेल खेलते, कूपरेज में मैच देखते, बसों और रेलों में घूमकर बॉम्बे के विभिन्न भागों को देखा करते। वे हर साल 10-15 दिन के लिए किसी गांव में कैंपिंग पर जाते।

देश के सबसे धनी व्यक्ति मुकेश अंबानी का उपरोक्त संस्मरण हमारी शिक्षा प्रणाली की पोल खोलता है। हमारे स्कूल वास्तव में भविष्य के कर्मचारी बना रहे हैं। यह बात धीरूभाई अंबानी अच्छे से जानते थे इसलिए उन्होंने बच्चों की शिक्षा के लिए स्कूलों पर ज़्यादा भरोसा नहीं किया और

**स्कूल असफलताओं या समस्याओं से लड़ना नहीं सिखाते। जब हमारे बच्चे जीवन में असफल होते हैं तो टूट जाते हैं क्योंकि उन्हें इस बारे में कुछ पता ही नहीं होता कि इससे कैसे निपटा जाए। उनका कोमल हृदय इस नाकामी से टूट जाता है और यही वजह है कि आत्महत्या आज के दौर की सबसे बड़ी क़ातिल बनकर उभरी है और इस क़त्ल में हमारे स्कूल बराबर के सहयोगी हैं। तो छठी मुख्य ग़लती हमारे स्कूलों की यह है कि ये बच्चों को जीवन की असफलताओं का सामना करना नहीं सिखाते हैं।**

अपने बच्चों के ऑल राउंड विकास के लिए अलग से शिक्षक की नियुक्ति की और परिणाम हमारे सामने है-देश की आर्थिकी के महत्वपूर्ण लीडर उन्हीं के बेटे हैं-मुकेश और अनिल अम्बानी।

एक बात यह भी स्पष्ट है कि लीडर अपने बच्चों को अलग नज़रिये से शिक्षा देते हैं और आम व्यक्ति सब कुछ स्कूलों पर ही छोड़ देते हैं। वे ख़ुश होते हैं जब उनका बच्चा अपनी यूनिफॉर्म साफ़ रखता है, समय पर स्कूल जाता है और आते ही अपना होमवर्क करता है और हमेशा अपने शिक्षकों को ख़ुश रखता है। रुकिये, ज़रा ग़ौर कीजिये क्या यही गुण एक अच्छे कर्मचारी के भी नहीं हैं ? हां, एक अच्छे कर्मचारी को अनुशासित, वक़्त का पाबंद और अपने बॉस को ख़ुश रखने वाला होना चाहिए। लीडर या महानता इन सब नियमों को कभी-कभी अवश्य तोड़ेगी। माफ़ कीजिये मैं उद्दण्डता का हिमायती नहीं हूं लेकिन थोड़ा बाग़ी और लीक से हटकर चलना ही लीडरशीप का एक प्रमुख गुण है। तो हमारे स्कूलों का सबसे बड़ा दोष है कि यह हमारे बच्चों को भविष्य का कर्मचारी बनाने पर आमादा है।

मेरी छः साल की बेटी को साइकल चलाना सीखना था। उसने मुझ से पूछा कि पापा क्या साइकल चलाना हमें स्कूल में सिखाएंगे? क्योंकि यह तो बहुत ज़रूरी है पापा, इससे मैं जल्दी से कहीं भी जा सकती हूं और इसी से मैं बड़ी होकर स्कूटी भी चलाना सीखूंगी। मैंने कहा हां बेटा, यह वाक़ई ज़रूरी है इसे तो स्कूलों को सिखाना ही चाहिए। मेरी पत्नी ने बात काटते हुए कहा कि रहने दो स्कूल साइकल सिखाने में एक महीने तक तो साइकल चलाने की थ्योरी बताएंगे, साइकल के पार्ट्स के नाम और उसके पीछे लगने वाले कठिन फिज़िक्स के नियम भी पढ़ाने लगेंगे, मतलब 5 घण्टों में सीखी जा सकने वाली साइकल को 50 दिन का उबाऊ कोर्स बना देगा स्कूल। बात सही है कि हमारे स्कूल ज़िंदगी के व्यावहारिक ज्ञान को नहीं सिखाते। वे नहीं बताते कि ज़िदगी के छोटे-छोटे और महत्वपूर्ण कार्य कैसे किये जाएं। वे व्यावहारिक ज्ञान को भी बोझिल और उबाऊ तरीक़े से पढ़ाते हैं। तो हमारी स्कूलों का दूसरा बड़ा दोष है कि वे व्यावहारिक ज्ञान को नहीं पढ़ाते।

हमारे बच्चों को शुरुआत में शिक्षक अच्छी हैंडराइटिंग के लिए दबाव बनाते हैं और इसमें उनके शुरुआती महत्त्वपूर्ण वर्ष बर्बाद हो जाते हैं, जबकि आज के समय में आपकी हैंड राइटिंग से आपके कैरियर पर कोई ख़ास प्रभाव नहीं पड़ता। पेन-पेपर लगभग ख़त्म होते जा रहे हैं। मोबाइल, कम्प्यूटर, लैपटॉप पर सबकी राइटिंग एक जैसी ही दिखती है। जब आप यह लेख पढ़ रहे होंगे तो आपको भी मेरी वास्तविक राइटिंग दिखाई नहीं दे रही होगी, जो वास्तव में बहुत ख़राब है लेकिन मेरे कैरियर में यह कभी रुकावट नहीं बनी तो इस उदाहरण से मेरा यह बताना लक्ष्य है कि हमारे स्कूल या हमारी शिक्षा प्रणाली भविष्य के अवसरों एवं ट्रेंड को आंकने में असफल है। हमारे स्कूलों की तीसरी बड़ी कमी यही है।

थॉमस एल्वा एडिसन प्राइमरी स्कूल में पढ़ते थे। एक दिन स्कूल से घर आये और मां को एक काग़ज़ देकर कहा, टीचर ने दिया है। उस काग़ज़ को पढ़कर मां की आंखों में आंसू आ गए। एडिसन ने पूछा क्या लिखा है? आंसू पोंछकर मां ने कहा–इसमें लिखा है– 'आपका बच्चा जीनियस है। हमारा स्कूल छोटे स्तर का है और शिक्षक





बहुत प्रशिक्षित नहीं हैं, इसे आप स्वयं शिक्षा दें।'

कई वर्षों बाद मां गुज़र गई। तब तक एडिसन प्रसिद्ध वैज्ञानिक बन चुके थे।

एक दिन एडिसन को अलमारी के कोने में एक काग़ज़ का टुकड़ा मिला, उन्होंने उत्सुकतावश उसे खोलकर पढ़ा, ये वही काग़ज़ था, जो टीचर ने दिया था जिसमें लिखा था–'आपका बच्चा बौद्धिक तौर पर कमज़ोर है, उसे स्कूल न भेजें।'

एडिसन घंटो रोते रहे.... फिर अपनी डायरी में लिखा– एक महान मां ने बौद्धिक तौर पर कमज़ोर बच्चे को सदी का महान वैज्ञानिक बना दिया।

महान थॉमस एल्वा का यह उदाहरण बताता है कि हमारे स्कूल हमारे अधिकांश बच्चों की महान छुपी हुई प्रतिभा को नहीं समझ पाते और जब समझेंगे ही नहीं तो उसे निखारेंगे कहां से। चौथी बड़ी कमी हमारे स्कूलों की यही है।

हमारे स्कूल हमारे बच्चों को पारिवारिक रिश्ते निभाना बिल्कुल नहीं सिखाते। फ़ौरी तौर पर मां-बाप का सम्मान सिखाकर अपने फ़र्ज़ की इतिश्री कर लेते हैं। जीवन में हमारे परिवार से रिश्ते अति महत्त्वपूर्ण हैं सफलतापूर्वक एवं ख़ुशहाल जीवन के लिए। पति-पत्नी के हमारे रिश्तों के बारे में हम विश्व इतिहास के शिखर पर हैं। हमारे स्कूल बच्चों को कुछ नहीं सिखाते शायद इसी लिए तलाक़ के मामले में हमारे रिश्ते ख़राब हो रहे हैं और हमारा जीवन नारकीय हो रहा है लेकिन स्कूल इन सबसे बेफ़िक्र हैं। पारिवारिक रिश्तों का महत्त्व सिखाये बग़ैर हमारी सारी शिक्षाएं व्यर्थ है।

स्कूल असफलताओं या समस्याओं से लड़ना नहीं सिखाते। जब हमारे बच्चे जीवन में असफल होते हैं तो टूट जाते हैं क्योंकि उन्हें इस बारे में कुछ पता ही नहीं होता कि इससे कैसे निपटा जाए। उनका कोमल हृदय इस नाकामी से टूट जाता है और यही वजह है कि आत्महत्या आज के दौर की सबसे बड़ी क़ातिल बनकर उभरी है और इस क़त्ल में हमारे स्कूल बराबर के सहयोगी हैं। तो छठी मुख्य ग़लती हमारे स्कूलों की यह है कि ये बच्चों को जीवन की असफलताओं का सामना करना नहीं सिखाते हैं।

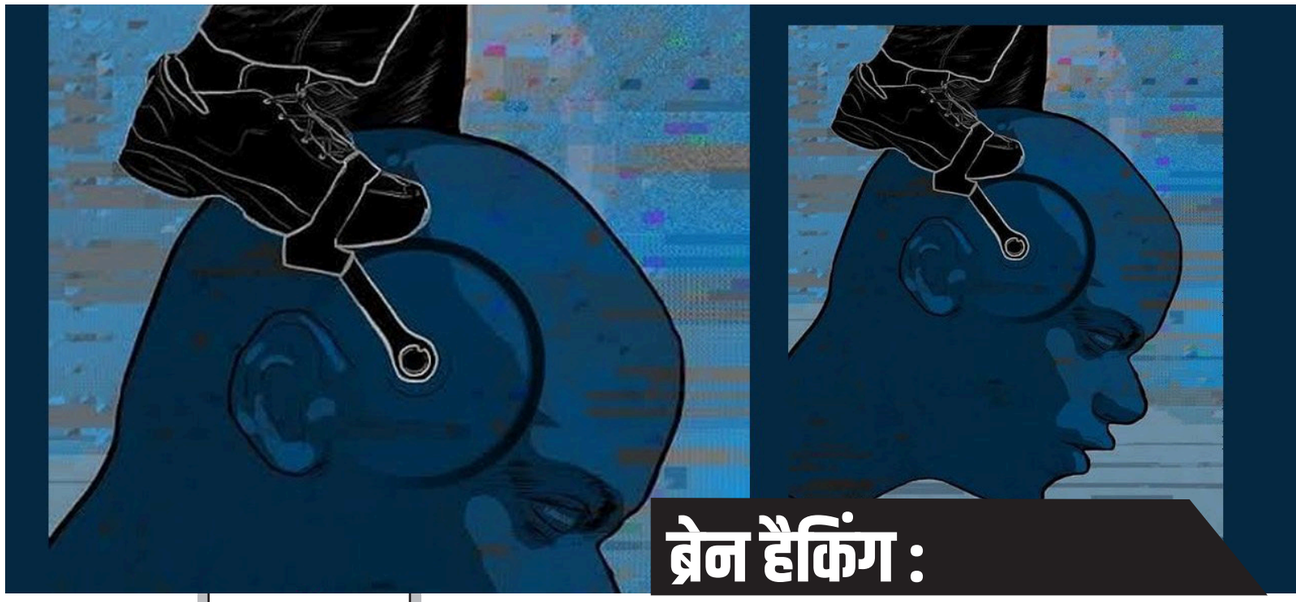
उपरोक्त प्रमुख छः समस्याएं हैं हमारे स्कूलों के साथ जो मैंने आपके सामने रखी हैं। अब आप क्या करें ? इन छः समस्याओं के समाधान के लिए आप अब भी स्कूलों से उम्मीद लगाएं हैं तो शायद आप भी उन्हीं भोले-भाले करोड़ों में से है जिन्होंने अपने बच्चों का पूरा भविष्य स्कूलों के भरोसे छोड़ दिया है। आप अपने बच्चों की इन छः समस्याओं से लड़ने के लिए अपने स्तर पर समाधान करें, इसके लिए आप पेशेवरों की मदद भी ले सकते हैं। यदि आप पॉलिसी मेकर हैं तो फिर इन समस्याओं के निराकरण के लिए नीतियां बनाएं और देश का भविष्य निखारें। शुरुआत ख़ुद से ही करें..... अपने मासूम बच्चों से कहें बेटा तुम्हें कर्मचारी नहीं लीडर बनना है, महान बनना है, सबके लिए आदर्श बनना है। अगर आपने ऐसा अपने बच्चे से कह दिया है तो फिर आप लीक से हट चुके हैं, अब बस इस रास्ते पर चल पड़ें। ■■

“

जब इन्सान मर जाता है तो उसके कर्मों का सिलसिला टूट जाता है। अलबत्ता तीन चीज़ें ऐसी हैं जो इससे अलग हैं- जारी रहने वाला सदक़ा या ज्ञान जिससे फ़ायदा उठाया जाए, या नेक संतान जो उसके लिए दुआ करे। (हदीस: मुस्लिम)

”

Super Marble Granite

# ब्रेन हैकिंग :

## ‘काले आईनों’ में दिखता भविष्य

टेक्नोलॉजी



डॉ. अबरार मुल्तानी

नेटफ्लिक्स की एक प्रसिद्ध वेब सीरीज ‘#ब्लैकमिरर’ में टेक्नोलॉजी का भविष्य और उसके दुष्परिणामों को दिखाया गया है। उसमें एक से बढ़कर एक रोचक एपिसोड है, लेकिन मुझे सबसे बेहतरीन लगा–‘#मेनअगेंस्ट द फायर’। इस एपिसोड में फ़ौजियों में एक एप्लीकेशन इंस्टॉल की जाती है–‘मास नामक’। मास का मक़सद एक नस्ल विशेष के लोगों को 100% नष्ट करना है। मास के इंस्टॉल होते ही उनके दिमाग़ सम्मोहित हो जाते हैं और उन्हें उस नस्ल के लोग जिन्हें रोशेट कहा गया है वीभत्स दिखने लगते हैं और उनकी आवाज़ें बहुत ही बुरी सुनाई पड़ती हैं। संक्षेप में वे उन्हें दानव जैसे दिखते हैं। क्लाइमेक्स में यह हक़ीक़त जान लेने वाले एक सिपाही से ऐप इंस्टॉल करने वाला विशेषज्ञ कहता है कि प्रथम और द्वितीय विश्व युद्ध में 100 में से केवल 15% से 20% सैनिक ही अपनी बंदूक़ का ट्रिगर दबा पाते थे। कई सैनिकों को ट्रिगर दबाने के लिए उनका ब्रिगेडियर बेत तक मारता था।

वियतनाम युद्ध में यह प्रतिशत बढ़कर 70 से 80 हुआ लेकिन युद्ध से लौटे हुए सैनिक इसके कारण तनाव में आए और उनमें से 30 से 35% ड्रग्स के आदि हो गए थे। लेकिन मास ने यह सब बदल दिया। सैनिकों के सारे सेंस बदल दिए। टॉरगेट उन्हें विभत्स दिखाई देते हैं, उनकी चीखें उन्हें सुनाई नहीं देती, उन्हें मारकर उन्हें पछतावा नहीं, बल्कि गर्व महसूस होता है। उनके सपनों में भी वे चीखें और लाशें नहीं दिखती जो


वियतनाम युद्ध में यह प्रतिशत बढ़कर 70 से 80 हुआ लेकिन युद्ध से लौटे हुए सैनिक इसके कारण तनाव में आए और उनमें से 30 से 35% ड्रग्स के आदि हो गए थे। लेकिन मास ने यह सब बदल दिया। सैनिकों के सारे सेंस बदल दिए। टॉरगेट उन्हें विभत्स दिखाई देते हैं, उनकी चीखें उन्हें सुनाई नहीं देती, उन्हें मारकर उन्हें पछतावा नहीं, बल्कि गर्व महसूस होता है।

**मनुष्य के मन में करुणा ईश्वर द्वारा प्रदत्त या ईश्वर द्वारा इनस्टॉल एक ऐप है। यह करुणा सैनिकों में भी होती है जिसके कारण वे अंजान लोगों को मारने से बचते हैं, ख़ासकर आम लोग और उनमें भी ख़ासकर मासूम दिखने वाले लोग जैसे बच्चे, बूढ़े और महिलाएं। यह करुणा मनुष्य को मनुष्य से जोड़ती है, यहां तक कि मनुष्य को अन्य जीवों से भी जोड़ देती है। मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है और वह संगठित होना चाहता है। उनको संगठित रहने के लिए हमेशा शत्रुओं की आवश्यकता होती है क्योंकि, शत्रु के बिना एक रहना या संगठित रहना संभव नहीं है।**

अमूमन सैनिकों को दिखती हैं उसकी जगह उन्हें सपने भी नियंत्रित दिखाए जाते हैं। मतलब युद्ध के लिए बिल्कुल परफेक्ट नियंत्रण मस्तिष्कों पर।"

मनुष्य के मन में करुणा ईश्वर द्वारा प्रदत्त या ईश्वर द्वारा इनस्टॉल एक ऐप है। यह करुणा सैनिकों में भी होती है जिसके कारण वे अंजान लोगों को मारने से बचते हैं, ख़ासकर आम लोग और उनमें भी ख़ासकर मासूम दिखने वाले लोग जैसे बच्चे, बूढ़े और महिलाएं। यह करुणा मनुष्य को मनुष्य से जोड़ती है, यहां तक कि मनुष्य को अन्य जीवों से भी जोड़ देती है।

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है और वह संगठित होना चाहता है। उनको संगठित रहने के लिए हमेशा शत्रुओं की आवश्यकता होती है क्योंकि, शत्रु के बिना एक रहना या संगठित रहना संभव नहीं है। 'हम बनाम वे' का फॉर्मूला मनुष्यों को सबसे अधिक संगठित करता है। मनुष्य अपने दुश्मनों का सफ़ाया कर देना चाहता है और ऐसा करने से जिनको लाभ होगा वह हमेशा यह चाहेंगे कि उनके संगठन वाले या उनकी तरफ़ वाले दूसरों के प्रति बेहद नफ़रत रखें। उसे मिलना-जुलना तो दूर उन्हें जीवित देखना भी पसंद न करें।

यह सब ब्रेन हैकिंग करने की कोशिशें आदिम काल से चली आ रही हैं। अलग-अलग सिद्धान्तों, विचारों और कहानियों के द्वारा। लेकिन, ब्लैक मिरर की स्टोरी को सही माने तो अब लोगों की ब्रेन हैकिंग टेक्नोलॉजी करेगी। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस अब हमारे ब्रेन को नियंत्रित करेंगी और एक रोबोट की तरह हम टारगेट को निस्तेनाबूद कर देंगे, बिना उस पर रहम खाए, बिना किसी पश्चाताप के, स्वप्न में भी कोई पछतावा नहीं। ■■





## कविताएं



### लखीमपुर के शहीद किसानों का मर्सिया

जिस कार से टक्कर हुई वो कोई कार नहीं; हवा थी
जिन निर्भीक और मासूम किसानों की पगड़ियां
उछल कर धूल में गिरीं
वो मसख़रे के हाथ की सफ़ाई थी, अभिनय था
जो लोग गाड़ी के नीचे कुचल कर मार दिए गए
वे नक़ली पुतले थे
यह सब जिस पर वाबेला है
वो लोकतंत्र की कला थी
संत की कल्पना थी

कोई गोली नहीं चली
यह तो किसी शास्त्रीय नृत्य का अंग था
तबले की थाप थी
जिसे आप समझ नहीं पाए
आप कलाहीन लोग
इसपर कोई कैसे उत्तेजित हो सकता है !
जबकि किसी कवि की कविता थी यह
या किसी लेखक की कथा का सूत्र वाक्य
या किसी नाटक का कलात्मक दृश्य

यह तो बस मृत्यु का सौंदर्य था
जो सड़क पर बिखर गया
लाल लहू नहीं, यह लाल रंग था
जो न जाने क्यूं
अंधेरे के बाद भी रिस्ता रहा
सड़कों पर
ज़ेहनों पर
और हमारे दिलों पर...

**–दरवेश**

### अकुलाहट

एक अजीबो-ग़रीब बेचैनी देश में फैली है,
मानो देश की जड़ें किसी ने निर्मलता से हिला दी हैं,
आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक
अस्थिरता है, दिशाहीनता है
देश के सूखे पत्ते हवा में इधर-उधर उड़ते हैं
जनमानस चंचल है अधीर है उतावला है
राजनीति, राष्ट्रनीति, प्रशासन
जैसे शब्द अर्थहीन हो गए हैं।
चुनाव उम्मीदवारी जनप्रतिनिधि
यह शब्द मज़ाक़ बन गए हैं
अंतर व्याकुल है आंसू वेदना की भट्टी में
कब से सूख गए हैं,
एक विस्फोट की आहट
एक बवंडर की गंध अराजकता का अंदेशा
झकझोर रहा है।

**–विमला ठकार**

“जिस व्यक्ति के साथ अल्लाह भलाई चाहता है, उसे धर्म में समझ प्रदान करता है।”

(हदीसः मुस्लिम)

Rainbow Flooring
BHATKAL



सद्भावना



डिम्पल कुमार स्वास्तिक

# मित्रता सबसे ऊपर...

वर्ष 2017 सितंबर का महीना था। मेरे घर से ख़बर आई कि मेरी मां की तबियत बहुत ख़राब है। दरअस्ल उनके गर्भाशय में संक्रमण था और डॉक्टर ने जितना जल्द हो सके ऑपरेशन की सलाह दी थी। अतः घर वापसी के लिए मुझे ट्रेन पकड़ना पड़ा।

एक तरफ़ ट्रेन चलने लगी दूसरी तरफ़ मेरे मन में भी कुछ वाजिब चिंताएं, समस्याएं और चुनौतियां आकार लेने लगीं। जैसे की ऑपरेशन कब, कहां और कैसे होगा ? ऑपरेशन हेतु क़रीब चालीस हज़ार रुपए ख़र्च होने थे, इसका इंतिज़ाम कहां से और कैसे होगा ? बिहार जैसे राज्य जहां स्वास्थ्य की निम्न स्तरीय सुविधा उपलब्ध है, सरकारी अस्पतालों में ऑपरेशन की संभावना कम ही थी।

दूसरी तरफ़ पैसे की कमी के कारण निजी अस्पतालों को मैं विकल्प के रूप में भी नहीं सोच पा रहा था। पूरे रास्ते इसी उधेड़बुन में रहा। खैर, घर पहुंचा। घर के सदस्यों से मुलाक़ात हुई। उपलब्ध संसाधनों एवं जुटाए जा सकने वाले संसाधनों के आधार पर हम सब योजनाएं बनाने लगे। उसी शाम को मेरे एक अज़ीज़ मित्र मुहम्मद अनवर साहिल से मुलाक़ात हुई। हमने इस मुद्दे पर चर्चा की तो एक और विकल्प सामने आया और यह विकल्प था दरभंगा मेडिकल कॉलेज में ऑपरेशन का। मुहम्मद अनवर साहिल कटिहार ज़िला के रहने वाले हैं। वर्ष 2016 में उनकी नियुक्ति मेरे गांव के उच्च प्राथमिक स्कूल में शिक्षक के रूप में हुई थी। गांव एवं समाज के एक ज़िम्मेदार नागरिक होने के नाते मैं अपना महत्वपूर्ण समय स्कूलों में ही पठन-पाठन में बिताया करता हूं। विचारों में समानता और उनकी कार्यशैली की उत्कृष्टता की वजह से वर्ष 2017 की प्राथमिक मुलाक़ात धीरे-धीरे प्रगाढ़ मित्रता में बदल गई। ये मित्रता सीमित दायरे में हमारे घर पर होने वाले खान-पान एवं पर्व-त्योहार तक पहुंची।

मित्रता की गहराई यहां तक पहुंची की हम कुछ निजी मामलों पर भी मशविरा करते हैं। ये मशविरा इसी श्रृंखला की कड़ी थी।

योजना तय हो गई। तय हुआ की DMCH जाना है ऑपरेशन हेतु। इस संपूर्ण प्रक्रिया में मुख्य भूमिका ‘सर’ की थी। ( मुहम्मद अनवर साहिल को मेरे गांव के बच्चे और अभिभावक प्यार और सम्मान से सर कहकर पुकारते हैं।) सर ने अपने एक मित्र से बात की। उनके मित्र DMCH में डेंटिस्ट हैं। उनके मित्र ने पूरी मदद का आश्वासन दिया। हम लोग अगले ही दिन DMCH पहुंचे। सर हमारे साथ थे । वहां पर उनके मित्र भी आए। उन्होंने हमें वहां के बारे में पूरी प्रक्रिया समझाया। हमने उनके अनुसार काम किया। आख़िरकार ऑपरेशन का कार्य सफलतापूर्वक पूर्ण हुआ। काफ़ी कम ख़र्च में एवं समय रहते ऑपरेशन संपन्न हुआ। दो तीन महीने में मेरी मां स्वथ्य हो गई। इस पूरी प्रक्रिया में अनवर सर हमेशा हमारे साथ रहे। उन्होंने सशरीर भी हौसला अफ़ज़ाई की एवं वित्तीय रूप से भी हमारी भरपूर मदद की। मैं और मेरा पूरा परिवार अनवर सर और उनके मित्र का हमेशा एहसानमंद रहेगा।

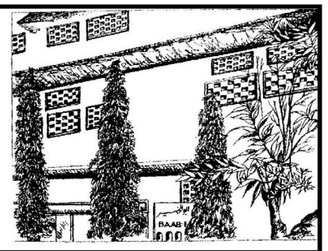
हमारी नज़दीकियों ने अपनेपन का स्वरूप ग्रहण कर लिया। इस चीज़ ने सद्भावना की संकल्पना को चरितार्थ किया है और मज़बूत किया है। जिस प्रकार पृथ्वी पर तमाम गतिविधियों के लिए सूर्य का प्रकाश ऊर्जा का संचार करता है। उसी प्रकार सद्भावना भी मानव जीवन में सकारात्मक प्रेरणा उत्पन्न करती है। सद्भावना से सद्भावना उत्पन्न होती है। उपरोक्त वृत्तांत में मैंने इस बात को जिया कि कैसे दो भिन्न धर्मावलंबी ज़रूरत पड़ने पर एक-दूसरे की सहायता करते हैं। परिणामस्वरूप न केवल मेरे परिवार में बल्कि पूरे समाज में सहिष्णुता एवं स्वीकारोक्ति के भाव का संचार हुआ। सद्भावना व्यक्ति को व्यक्ति से जोड़कर आदमियत का एहसास कराता है। ■■

# अनाथ लड़कियों की पुकार

## VOICE OF ORPHAN GIRLS

**मुस्लिम लड़कियों का यतीमख़ाना (गया)**

**एक संक्षिप्त परिचय**



**लड़कियों के लिए आधुनिक और इस्लामी तालीम से लैस राष्ट्रीय स्तर का एक आदर्श रिहाइशी (Residential) इदारा**

● 30 वर्षीय सेवाएं ● 19 विभाग शिक्षा प्राथमिक से मैट्रिक तक पत्राचार शिक्षा (Distance Education) I.A., B.A., M. A. एवं Library Science (Blis) ● स्टडी सेन्टर-यतीमख़ाना इस्लामिया गया ● मंज़ूरशुदा अलीगढ़ मुस्लिम यूनीवर्सिटी शोबा-ए-हिफ़्ज़ व नाज़रा के साथ-साथ मैट्रिक (Matric) ● 9 छात्राओं ने हिफ़्ज़ के साथ मैट्रिक पास किया ● प्रौढ़ शिक्षा (Adult Educations) वोकेशनल सेन्टर (Vocational Centre) ● कटिंग और सिलाई : 11 बैच 103 छात्राएं ● ज़री वर्क्स : 7 बैच 65 छात्राओं ने Certificate हासिल की ● बिहार सेकेन्ड्री बोर्ड 1993 ई. से 2021 ई. तक 102 अनाथ बच्चियों और 78 मां-बाप वाली बच्चियों ने मैट्रिक पास किया ● कंप्यूटर (Computer) की भी शिक्षा ● वार्षिक ख़र्च : 35 लाख रुपये से अधिक ● आमदनी के स्रोत : मुस्लिम अवाम के चन्दे ● इदारा 100 अनाथ बच्चियों का सारा ख़र्च पूरा करता है ● किफ़ाला स्कीम (Sponsorship) के तहत एक यतीम बच्ची का वार्षिक ख़र्च 20,000/- रुपये है—आप भी एक अनाथ बच्ची का ख़र्च उठाकर सवाब में शरीक हों ।

सहायता के विभिन्न रूप : उदाहरणस्वरूप ● ज़कात ● सदक़ात ● अतियात ● पैदावार की ज़कात ● दीनी किताबें ● ज़मीन की ख़रीदारी और क़र्ज़ की अदाएगी आदि ● स्टाफ़ की मासिक आय के लिए 1,35,000/- रुपये से अधिक ● मां-बाप या रिश्तेदारों के नाम कमरा या हॉल बनवाने और निर्माण कार्यों के लिए ईंटें, सीमेंट, सरिया और अन्य सामग्री या उसका मूल्य देना। नोट : ❶ यहां प्रतिवर्ष हिसाब चेक किए जाते हैं और ऑडिट होता है। हर चीज़ खुली किताब की तरह है। ❷ इदारा में ख़ुद आकर बराबरी का नमूना देखें कि अनाथ बच्चियां और वे बच्चियां जिनके मां-बाप हैं किस तरह मिल-जुलकर रहा करती हैं । ❸ इस्लामी माहौल, खुला स्थान, इस्लामी लिबास, इस्लामी यूनिफार्म और इस्लामी तालीम के साथ-साथ कम ख़र्च में बिहार सेकेन्ड्री बोर्ड के निसाब के साथ मेयारी तालीम।

चार बातें याद रखें : ❶ बैंक (Bank) की वह रक़म जो सूद (Interest) के तौर पर बैंक से मिलती है, जो मुसलमानों के लिए हराम है उस रक़म को ग़रीब यतीम लड़कियों की अशिक्षा और जहालत दूर करने और तालीम फैलाने के लिए लड़कियों के दारुल यतामा फंड में दें। ❷ यतीम बच्चियां जिनके पिता का देहांत हो चुका है उनके भोजन एवं आवास के साथ-साथ एक बेटी की तरह यहां सारी सहूलत बिल्कुल निःशुल्क दी जाती हैं ❸ बाहरी छात्राओं के लिए अपने ख़र्च पर होस्टल की भी व्यवस्था है। ❹ यतीम तालिबात का दाख़िला तालीम मअ तआम-ओ-क़याम और रिहाइश बिल्कुल मुफ़्त है कोई ख़र्च नहीं लिया जाता है।

नोट : क़ौम के प्रतिष्ठित व्यक्तियों से अनुरोध है कि क़ौम की यतीम बच्चियों को इदारा में दाख़िल कराने के लिए रहनुमाई करें और तवज्जोह दिलाएं। शुक्रगुज़ार हूंगा।

**इदारा आपके फ़राख़दिलाना और मुख़लिसाना तआवुन का मुंतज़िर है।**

आप ख़ुसूसी तवज्जोह दें : मुल्क में लॉकडाउन (Lockdown) की वजह से आपका यह इदारा माली मुश्किलात में घिरा हुआ है। दुश्वारी का सामना है। आमदनी घट के कम हो गई है। यह साल भी मुल्क के दीनी इदारों के लिए ज़िन्दगी और मौत का सवाल बन गया है। ख़ुदारा यतीमख़ाने मदारिस और मसाजिद को बन्द होने से बचाइए। इन पर रहम कीजिए। अल्लाह आप पर रहम करेगा।

**Foreign Donors ग़ैर-मुल्की चंदा दहंदगान**

A/c Name : The Gaya Muslim Girls Orphanage
Bank A/c No :
Bank Swift Code :
Bank :

**Contact Us For New Bank Account Details**

नोट : बाहर मुल्क के हज़रात अब डॉलर, रियाल और पाउंड वग़ैरह में भी ऊपर लिखे हुए अकाउंट नम्बर पर अपनी रक़म भेज सकते हैं।

चेक व ड्राफ्ट पर सिर्फ यह लिखें : **"The Gaya Muslim Girls' Orphanage"**

तरसीले ज़र व राबते का पता : Hon. General Secretary
The Gaya Muslim Girls' Orphanage
At. Kolowna, P.O. Cherki-824237, Distt. Gaya (Bihar) India
E-mail : thegayamuslimgirlsorphanage@gmail.com, Website : www.gmgo.in

**Indian Donors : भारतीय चंदा देने वाले**

A/c Name : The Gaya Muslim Girls Orphanage
Bank A/c No. : 300402010007752
Bank IFS Code No : UBIN0530042
Bank : Union Bank of India (Main Branch, Gaya)

नोट : हिन्दुस्तानी सूबों और बाहर मुल्क में रहने वाले हज़रात हिन्दुस्तानी बैंक का चेक व ड्राफ्ट और रक़म हिन्दुस्तानी चंदा दहंदगान वाले अकाउंट नम्बर पर भेजें।

नोट : Documentary Film - Nazr-e-Enayeth जिसमें दोनों यतीमख़ाना (Boys & Girls) की मुख़्तसर तारीख़ है, इंटरनेट You-Tube पर देखें।

नोट : रक़म कोर बैंकिंग और ऑनलाइन Online से भेजने वाले हज़रात मोबाइल या ई-मेल E-mail या डाक से मुकम्मल पता भेज दिया करें ताकि रक़म की रसीद रवाना की जा सके।

इक़बाल अहमद ख़ान बानी व एज़ाज़ी जेनरल सेक्रेट्री - 09934480190




राजनीति



डॉ. नफ़ीस अख़्तर

# लोकतंत्र के लिए चुनाव प्रणाली में सुधार की आवश्यकता

हमारी वर्तमान चुनाव प्रणाली "सरल बहुमत प्रणाली" (First past the post system)" अनेक कारणों से एक लोकतांत्रिक प्रणाली नहीं है। लोकतंत्र का सबसे मुख्य बिंदु राज्य व्यवस्था में सबका प्रतिनिधित्व और समावेश है। यह प्रणाली समावेशी नहीं है, यह सबको प्रतिनिधित्व नहीं देती है। एक सदस्यीय निर्वाचन क्षेत्र में सर्वाधिक मत प्राप्त करने वाला प्रत्याशी विजयी माना जाता है चाहे उसे उस क्षेत्र के कुल मतदाताओं की बहुसंख्य का समर्थन न भी प्राप्त हो, बल्कि सामान्यतः ऐसा ही होता है। हारे हुए प्रत्याशियों को वोट करने वाले मतदाताओं का कोई प्रतिनिधित्व सरकार में नहीं होता है क्योंकि जिनको उन्होंने वोट किया वह चुना ही नहीं गया। जो चुना गया उसे सब प्रत्याशियों से अधिक मत अवश्य मिले लेकिन कुल मतों में उसके समर्थन में पड़ने वाले मत आमतौर पर उसके विरुद्ध पड़ने वाले मतों से बहुत कम होते हैं। सरकार बनाने वाले दल को भी बहुमत प्राप्त नहीं होता है। वर्तमान एनडीए को संपूर्ण मतदान का केवल 45 प्रतिशत मत ही प्राप्त हुआ है। 2014 में केवल 38 प्रतिशत मतदाताओं के समर्थन से सरकार चल रही थी, जिसका अर्थ यह है कि 62 प्रतिशत मतदाता जिस दल की सरकार बनने के ख़िलाफ़ थे उसी दल ने अल्पमत के आधार पर सत्ता हासिल की थी। यूपीए प्रथम और द्वितीय को 2004 और 2009 में क्रमशः मात्र 26% और 28% मत ही मिले थे और उसने सरकार बनाई थी। 2019 में भाजपा को कुल 37% मत प्राप्त हुए। इस अनुपात में उसे न्यायतः लगभग 200 सीटें ही प्राप्त होनी चाहिए थी लेकिन उसे कुल 303 सीटें मिली हुई है। यानी मत प्रतिशत तो 37% है, लेकिन सीटों की संख्या 56% है। यही वर्तमान चुनाव प्रणाली का अलोकतांत्रिक दोष है कि संपूर्ण मतदान के अनुपात में किसी दल को मिलने वाले कुल मतों द्वारा उस दल के जितने सदस्य न्यायतः चुने जाने चाहिए उससे कहीं अधिक चुन लिए जाते हैं। 1952 के भारत के प्रथम चुनाव से ही ऐसा होता चला आया है।

इस प्रणाली में विभिन्न प्रकार के अल्पसंख्यक समुदायों को पर्याप्त प्रतिनिधित्व ही नहीं मिल पाता है।

उदाहरण के लिए भारत के सबसे बड़े अल्पसंख्यक समुदाय अर्थात् मुसलमानों को किसी भी लोकसभा में कभी अपनी संख्या के अनुपात में प्रतिनिधित्व नहीं मिल सका। यह भारतीय लोकतंत्र की असफलता ही है कि देश और समाज की इतनी बड़ी इकाई अब तक पर्याप्त प्रतिनिधित्व से वंचित है। सर्वाधिक मतप्राप्त व्यक्ति की विजय की यह प्रणाली प्रायः सदैव ही सबसे बड़े दलों के अनुकूल और दुर्बल एवं अल्पसंख्यक दलों के प्रतिकूल होती है।

इस सिस्टम से अलग दुनिया में एक और प्रणाली प्रचलित है जिसे आनुपातिक प्रतिनिधित्व वाली चुनावी प्रणाली कहा जाता है। इस सिस्टम में किसी दल को उसे प्राप्त कुल मतों के अनुपात में ही सदस्यों की संख्या आवंटित की जाती है। एक ओर यह तरीक़ा बहुमत के आधार पर ही सरकार के गठन को सुनिश्चित करता है, क्योंकि इसमें सरकार बनाने के लिए आवश्यक पचास प्रतिशत से अधिक सदस्यों की संख्या पचास प्रतिशत मतों के बिना हासिल नहीं की जा सकती है, दूसरी ओर यह लगभग सबको प्रतिनिधित्व प्रदान करता है, क्योंकि इसमें किसी निर्वाचन क्षेत्र से एक सदस्य चुनने के बजाय प्राप्त मतों के अनुपात में हर दल को सीट आवंटित की जाती है जिन पर वरियता सूची के अनुसार सदस्यों का चयन हो जाता है।

उदाहरण के लिए, एक निर्वाचन क्षेत्र से दस सदस्यों का चुनाव किया जाना है तो एक दल को यदि कुल मतदान में से 60% और दूसरे दल को 40% मत मिले हैं तो क्रमशः उनके 6 और 4 सदस्य उनकी वरीयता सूची के अनुसार निर्वाचित हो जाएंगे। इस प्रकार इस प्रणाली में प्रत्येक वोट का प्रतिनिधि सदन में मौजूद होता है। हारे हुए प्रत्याशी को मिले वोट की तरह उनका वोट ज़ाया नहीं होता है। यह वरीयता सूची भी जनता के मतानुसार बनती है, अर्थात् हर दल उस निर्वाचन क्षेत्र से अपने प्रत्याशियों की सूची भी मतदाताओं के समक्ष पेश करता है और उनमें शामिल नामों पर पड़े वोटों के अनुसार हर दल की वरीयता लिस्ट बन जाती है।

आनुपातिक प्रणाली की एक ख़ूबी यह है कि इसमें विभिन्न अल्पसंख्यक समुदाय भी अपनी संख्या के अनुपात में सदन में अपना प्रतिनिधित्व पाने में सक्षम होते हैं। भारत में सबसे बड़े अल्पसंख्यक समुदाय का उनकी जनसंख्या के अनुपात से आधे से भी कम राजनैतिक प्रतिनिधित्व का कारण वर्तमान में लागू सरल बहुमत प्रणाली है।

भारत जैसे लोकतंत्र प्रेमी समाज में अल्पसंख्यक समाज के अल्प-प्रतिनिधित्व का कभी चर्चा का विषय न बन पाने और उन्हें पर्याप्त प्रतिनिधित्व देने को सुनिश्चित करने वाले उपायों के बारे में कभी ध्यान न देने का अर्थ आख़िर क्या है? क्या कोई लोकतंत्र सभी सामाजिक घटकों को पर्याप्त प्रतिनिधित्व दिये बिना एक वास्तविक लोकतंत्र हो सकता है?

भारतीय लोकतंत्र की एक बड़ी समस्या राजनीति का अपराधिकरण है। सांसदों एवं विधायकों की एक बड़ी संख्या वह है जिनके ख़िलाफ़ न्यायालयों में गंभीर आपराधिक मामलों में मुक़दमे चल रहे हैं। नेश्नल इलेक्शन वाच और एसोशिएशन फॉर डेमोक्रेटिक रिफार्म (ADR) द्वारा जारी रिपोर्ट के अनुसार, जहां वर्ष 2009 में गंभीर आपराधिक मामलों वाले सांसदों की संख्या 76 थी, वहीं 2019 में यह बढ़कर 159 हो गई है। इस प्रकार 2009-19 के बीच आपराधिक पृष्ठभूमि वाले सांसदों की संख्या में कुल 109 प्रतिशत की बढ़ोत्तरी देखने को मिली है। इसके अनेक कारणों में से एक यह है कि राजनैतिक दल प्रत्याशियों की साफ़ छवि के बजाय उनकी जीतने की क्षमता को वरीयता देते हैं।

आनुपातिक प्रणाली में व्यक्तियों के बजाय पार्टियों को वोट दिया जाता है, अतः इस प्रणाली में प्रत्याशियों की विजय क्षमता पर आधारित राजनीति के आपराधिकरण पर किसी हद तक सफल रोक लगाई जा सकती है। आनुपातिक प्रणाली में उस घोड़ा बाज़ारी और दलीय निष्ठा के क्रय विक्रय की संभावना भी नहीं होती है जो हालिया दिनों में भारतीय लोकतंत्र के स्वास्थ्य के लिए एक चुनौती बन गया है, क्योंकि इसमें प्रत्याशियों के अप्रत्यक्ष चुनाव के बजाय दलों को सीटें आवंटित होती हैं। किसी सदस्य के पार्टी छोड़ने पर सदन में उसकी सदस्यता छिनकर, पार्टी की वरीयता सूची में मौजूद अगले नाम की तरफ़ हस्तांत्रित हो जाती है।

किसी की सदस्यता समाप्त होने या किसी के देहांत होने पर उपचुनाव की आवश्यकता भी नहीं होती है, क्योंकि ऐसा होने पर सदस्यता सूची के अगले नाम की तरफ़ हस्तांत्रित हो जाती है। उपचुनाव में व्यय होने वाले धन की बचत के साथ हर समय बने रहने वाले चुनावी माहौल से भी छुटकारा मिल जाता है।

हमारे देश में वामपंथी विचारधारा वाली पार्टियों समेत कई अन्य दल. राजनीतिज्ञ तथा बुद्धिजीवी समय-समय पर आनुपातिक चुनाव प्रणाली की मांग उठाते रहे हैं। आवश्यकता है कि लोकतंत्र के हितों की रक्षा के लिए पुनः इन जैसे सुधारों पर चर्चा को तेज़ किया जाए। ■■



**अभिव्यक्ति के ख़तरे**



**मुहम्मद यूसुफ़ 'मुन्ना'**

# अल्पसंख्यक : लोकतंत्र का पैमाना

अल्पसंख्यक किसी लोकतांत्रिक देश के थर्मामीटर होते हैं। इनके साथ होने वाले व्यवहार से उस देश के लोकतंत्र का स्वास्थ्य मापा जा सकता है। 2014 के बाद से ही भारत के बारे में कई अंतर्राष्ट्रीय एजेंसियां यह कह चुकी हैं कि इसका लोकतांत्रिक स्वास्थ्य ठीक नहीं और उसकी दशा दिन-प्रतिदिन गिरती जा रही है। ऐसा इसलिए है कि 2014 के बाद से ही कई स्तरों पर अल्पसंख्यकों को निशाना बनाया जा रहा है। राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर अल्पसंख्यकों पर होने वाले हमलों



के साथ लोकतंत्र की दुर्दशा पर चिंता जतायी जाती रही है। इसके बाद भी देश में अल्पसंख्यकों पर होने वाले हमलों पर कोई फ़र्क़ नहीं पड़ा है। इन हमलों को सही ठहराने के लिए गौरक्षा, लव-जिहाद, देशभक्ति को बहाने के रूप में इस्तेमाल किया जा रहा है।

अभी लखीमपुर में भाजपा मंत्री के बेटे आशीष ने सिख किसानों पर गाड़ी चढ़ाकर उनकी हत्या कर दी। इस मामले में पुलिस जिस तरह कार्रवाई कर रही है उस पर सत्ता का दबाव साफ़ दिख रहा है। सुप्रीम कोर्ट को इस मामले में संज्ञान लेते हुए सवाल करना पड़ा कि क्या पुलिस हत्या के बाक़ी आरोपियों के साथ भी ऐसा ही सुलूक करती है जैसा आशीष के मामले में किया जा रहा है? विपक्ष जो कि एक लोकतांत्रिक व्यवस्था को ज़िन्दा रखने का महत्वपूर्ण अंग है के साथ राज्य सरकार का रवैया अपराधियों जैसा है।

अमेरिका यात्रा के दौरान जब प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी को अमेरिकी उपराष्ट्रपति कमला हैरिस लोकतंत्र को मज़बूत करने की सीख दे रही थीं, उस समय असम में पुलिस निहत्थे मुसलमानों पर गोलियां चला रही थी। अतिक्रमण हटाने की कार्रवाई के दौरान यह बर्बरता की गयी। पहले पुलिस ने एक निवासी मोइनुल हक़ की भतीजी को लाठी मार कर उसका हाथ तोड़ दिया। फिर इस हमले का प्रतिकार कर रहे मोइनुल हक़ की हत्या कर दी। गोली मारने के बाद पुलिस की मौजूदगी में एक फासीवादी फ़ोटोग्राफ़र उसकी लाश पर कई बार कूदा और पुलिसकर्मी ने लाश को डंडा मार कर यह जांचने की कोशिश की कि वह ज़िन्दा है या मर गया।

ख़बरों में कहा गया कि असम पुलिस ने तीन लोगों की हत्या की।

**अमेरिका यात्रा के दौरान जब प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी को अमेरिकी उपराष्ट्रपति कमला हैरिस लोकतंत्र को मज़बूत करने की सीख दे रही थीं, उस समय असम में पुलिस निहत्थे मुसलमानों पर गोलियां चला रही थी। अतिक्रमण हटाने की कार्रवाई के दौरान यह बर्बरता की गयी। पहले पुलिस ने एक निवासी मोइनुल हक़ की भतीजी को लाठी मार कर उसका हाथ तोड़ दिया। फिर इस हमले का प्रतिकार कर रहे मोइनुल हक़ की हत्या कर दी। गोली मारने के बाद पुलिस की मौजूदगी में एक फासीवादी फ़ोटोग्राफ़र उसकी लाश पर कई बार कूदा और पुलिसकर्मी ने लाश को डंडा मार कर यह जांचने की कोशिश की कि वह ज़िन्दा है या मर गया।**

कई घायलों के शरीर में गोलियां एक हफ़्ते तक रहीं जिससे उनमें संक्रमण का गंभीर ख़तरा पैदा हो गया था। इस घटना पर ओआईसी ने चिंता जताते हुए मोदी सरकार से मांग की कि वह अल्पसंख्यकों के अधिकारों की रक्षा करे तो इसे भारत ने अपना आंतरिक मामला बताया। हालांकि मौजूदा सरकार इससे पहले पाकिस्तान में अल्पसंख्यकों पर होने वाले अत्याचारों के मुद्दे उठाती रही है।

सवाल यह है कि अत्याचार कब से किसी देश का आंतरिक मामला हो गया? अल्पसंख्यकों पर अत्याचार से जुड़ी इन दोनों घटनाओं में सत्ता और व्यवस्था में बैठे लोगों की भूमिका सामने हैं।

विडम्बना यह है कि इन्हीं लोगों पर लोकतंत्र को चलाने की ज़िम्मेदारी भी है। अल्पसंख्यकों पर होने वाले अत्याचारों और हमलों की समीक्षा करें तो यह तीन रूपों में सामने आती हैं। पहला यह कि झूठे आरोप लगाकर फासीवादियों द्वारा उनको पीटा जाता है, उनको पुलिस के हवाले कर दिया जाता है या उनकी हत्या कर दी जाती है। दूसरा यह कि किसी फासीवादी संगठनों द्वारा बहाने से माहौल को सांप्रदायिक बना दिया जाता है फिर पुलिस-प्रशासन की मौजूदगी अथवा मौन संरक्षण में अल्पसंख्यकों के घरों, दुकानों या धार्मिक स्थलों पर हमले किये जाते हैं तथा जान-माल का नुक़सान किया जाता है।

तीसरा यह कि सुरक्षा बलों की ओर से मुसलमानों को फ़र्ज़ी केसों में फंसा कर गंभीर धाराओं में जेल भेज दिया जाता है। हिरासत के दौरान उनको अमानवीय ढंग से प्रताड़ित किया जाता है और उनका जीवन बर्बाद कर दिया जाता है। इन तीनों तरह के अत्याचारों में फासीवादी, सांप्रदायिक अथवा दक्षिणपंथी संगठनों को सत्ता तथा उन संवैधानिक संस्थाओं की ओर से प्रत्यक्ष या परोक्ष समर्थन मिलता है, जिन्होंने देश में क़ानून-व्यवस्था और लोकतंत्र को बहाल रखने का शपथ ले रखा है और जिनको सभी नागरिकों के टैक्स के पैसों से वेतन मिलता है।

अल्पसंख्यकों, ख़ासकर मुसलमानों के साथ धार्मिक आधार पर किये जाने वाले अत्याचारों का इन्हीं तीनों दृष्टिकोण से आकलन करने की ज़रूरत है। पिछले माह गुजरात के गोधरा में पुलिस ने क़ासिम अब्दुल्लाह हयात को 'गौमांस' तस्करी के कथित आरोप में गिरफ़्तार कर लिया। उनको थाने ले जाया गया, जहां फासीवादी संगठन के लोग भी मौजूद थे। उनके परिजनों के मुताबिक़ पुलिस और फासीवादियों की ओर से इतना पीटा गया कि 16 सितंबर को थाने में ही उनकी मौत हो गयी। अभी तक फासीवादी मुसलमानों को सड़कों पर पीट-पीटकर हत्या करते थे, क़ासिम की थाने में मोब लिंचिंग कर दी गयी। उनके दो छोटे बच्चे हैं। इस घटना में पुलिस क़ानून का पालन करने की जगह फासीवादियों के तरीक़े का इस्तेमाल करती नज़र आयी। क़ासिम को पुलिस ने मजिस्ट्रेट के सामने पेश करने की ज़रूरत नहीं समझी।

कुछ दिनों पहले इंदौर में फॉसीवादियों ने एक चूड़ी विक्रेता तस्नीम को पीटा। फिर उसी पर लड़की छेड़ने का आरोप लगाते हुए गिरफ़्तार कर लिया। जिन लोगों ने तस्नीम को पीटा था उनको अदालत से ज़मानत मिल गयी, जबकि वह अभी जेल में है।

हाथरस में ऊंची जाति के अपराधियों द्वारा दलित लड़की की रेप के बाद हत्या के मामले की रिपोर्टिंग के लिए गये मीडियाकर्मी सिद्दीक़ कप्पन को जेल में डाल दिया गया। बिना किसी अपराध के वे जेल में ही बंद हैं। यानी लोकतंत्र का चौथा स्तंभ भी सुरक्षित नहीं है। इसका सबसे सशक्त उदाहरण पत्रकार रविश कुमार हैं।

उत्तर प्रदेश के शामली में फासीवादियों ने एक मुस्लिम युवक समीर की पीट-पीटकर हत्या कर दी। दिल्ली में एक डिलीवरी बॉय के बारे में जब पता चला कि वह मुस्लिम है तो उसको पीटा गया। दिल्ली दंगों में पुलिस और फासीवादियों की भूमिका अनेक सीसीटीवी में क़ैद हुई। पुलिस और सत्ता पक्ष के दंगाइयों पर सख़्त टिप्पणी करने वाले दो जजों का ट्रांस्फर कर दिया गया। अल्पसंख्यकों के ख़िलाफ़ खुलेआम सक्रिय फासीवादी संगठन यह बताने के लिए काफ़ी हैं कि देश में लोकतंत्र की जड़ें कितनी खोखली हैं।



यही बात कई अंतर्राष्ट्रीय संस्थाएं अपनी रिपोर्ट में भी कहती हैं। वर्तमान में देश में लोकतंत्र हाथी के दांत की तरह सिर्फ़ दिखाने भर का है। अनेक संस्थाएं अपनी रिपोर्ट में कहती हैं कि नरेन्द्र मोदी के प्रधानमंत्री बनने के बाद से लोकतंत्र रसातल में जा चुका है। मार्च महीने में अमेरिका स्थित संस्था फ्रीडम हाउस ने अपनी सालाना रिपोर्ट में कहा था कि भारत के लोकतंत्र की रैंकिंग काफ़ी नीचे आ गयी है। मार्च में ही स्वीडन स्थित वी-डेम इंस्टिट्यूट ने कहा था कि भारत की लोकतांत्रिक व्यवस्था चुने हुए निरंकुश शासन में तब्दील हो चुकी है। अभी मोदी की अमेरिका की यात्रा के दौरान मशहूर 'टाइम' पत्रिका ने दुनिया के सौ सबसे प्रभावशाली लोगों की सूची जारी की। इसमें मोदी की छवि को भारत को 'हिन्दू राष्ट्र' की ओर ले जाने वाला बताया। इससे पहले सितंबर 2019 में पत्रिका ने प्रधानमंत्री मोदी को 'भारत को धर्मनिरपेक्षता से हिन्दू राष्ट्रवाद की ओर धकेलने वाला बताया था। अमेरिकी विदेश विभाग की अंतर्राष्ट्रीय धार्मिक स्वतंत्रता रिपोर्ट-2019 में कहा गया कि भारत में गोहत्या के नाम पर हिंसक हिन्दू चरमपंथी समूहों द्वारा अल्पसंख्यक समुदायों, विशेष रूप से मुसलमानों को निशाना बनाया जा रहा है।

इस रिपोर्ट में यह भी कहा गया कि भारत के ऐसे शहरों के नाम बदलने का प्रस्ताव जारी किया गया जिनके नाम मुस्लिमों से जुड़े हुए हैं। ये प्रस्ताव भारतीय इतिहास में मुस्लिम योगदान को मिटाने के लिए हैं। अनेक वैश्विक संस्थाओं का मानना है कि पिछले कुछ सालों में भारत में अल्पसंख्यकों पर हमले बढ़े हैं। ज़ाहिर है कि यह सब तभी कहा जाएगा जब अंतर्राष्ट्रीय बिरादरी में किसी देश की छवि ख़राब होगी।

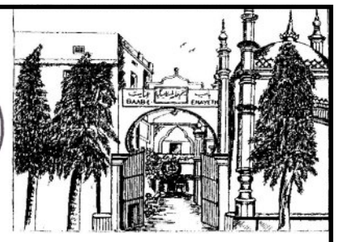
बड़ा सवाल यह है कि अंतर्राष्ट्रीय मंच पर 'गांधी' की छवि वाले इस देश पर गोडसे की परछाई क्यों पड़ने लगी? इसके लिए कौन ज़िम्मेदार है? कुछ लोगों की फासीवादी विचारधारा के कारण एक बार अगर इस देश की छवि अल्पसंख्यक पर अत्याचार करने वाली बन गयी तो उससे बाहर निकलना आसान नहीं होगा, इसलिए समय रहते चेत जाने की ज़रूरत है। ■■

# अनाथ लड़कों की पुकार

## VOICE OF ORPHAN BOYS

### यतीमख़ाना इस्लामिया गया (रजि॰)

एक नज़र में



दीनी व असरी उलूम की अपने तर्ज की मशहूर अकामती **(Residential)** तालीमगाह

● 103 सालह ख़िदमात ● बहुत सारे शोबाजात तालीमी मराहिल दर्जा अतफ़ाल ता मैट्रिक (Matric) शोबा हिफ़्ज़-ओ-नाज़रह हिफ़्ज़ के साथ-साथ मैट्रिक बिहार स्कूल बोर्ड एक्ज़ामिनेशन हर साल का सद फ़ीसद 100% रिजल्ट ● फासलाती (Distance Education) I.A, B.A, M.A. और लाइब्रेरी साइंस (Blis) में 2021-22 के सेशन के लिए दाख़िला जारी (स्टडी सेन्टर यतीमख़ाना गया) मंज़ूरशुदा : मुस्लिम यूनिवर्सिटी अलीगढ़ ● कम्प्यूटर (Computer) की भी तालीम कफ़ाला स्कीम के तहत एक यतीम तालिब इल्म पर सालाना ख़र्च बीस हज़ार (Rs. 20,000) रुपये 70 यतीम तलबा जिनका सारा ख़र्च इदारा ही बर्दाश्त करता है। सालाना ख़र्च 25 लाख रुपये से ज़ायद ज़रिया-ए-आमदनी मुस्लिम अवाम के चन्दे ● आप जिस शक्ल में मुमकिन हो तआवुन फ़रमा कर अल्लाह तआला से अज्र अज़ीम हासिल करें। तआवुन की शक्लें मसलन ● ज़कात ● अतियात ● सदक़ात ● पैदावार की ज़कात ● चिर्म-ए-क़ुरबानी ● एक यतीम बच्चे का सालाना ख़र्च ● बैंक (Bank) के सूद (Interest) की वह रक़म जो मुसलमानों के लिए हराम है। ● अपने या किसी बुज़ुर्ग के नाम पर कमरा या हॉल बनवा दें वग़ैरह।

तीन बातें याद रखें : ❶ बैंक (Bank) की वह रक़म जो बैंक से सूद (Interest) के तौर पर मिलती है, जो मुसलमानों के लिए हराम है उस रक़म को ग़रीब यतीम तलबा की जहालत दूर करने और तालीम फैलाने के लिए लड़कों के दारुल यतामा फंड में दें। ❷ यहां हर साल (Audit) भी कराया जाता है। ❸ आप इदारा में पहुंचकर मसावात का मिसाली और अमली नमूना अपनी आंखों से देखें कि किस तरह यतीम और ग़ैर-यतीम बच्चे मिलकर रहा करते हैं।

नोट : इनायत आई.टी.आई. (Enayeth I.T.I.) की दुमंज़िला इमारत खड़ी हो गई है और दाख़िला जुलाई 2018 ई. से इलेक्ट्रीशियन ट्रेड (Electrician Trade) से ही शुरू है। दूसरा ट्रेड फीटर (Fitter) का है। दोनों में दाख़िला 2020-2022 के लिए जारी है। यह N.C.V.T. (भारत सरकार) से मंज़ूरशुदा है। ❷ पुरफ़िज़ा मक़ाम, पुरसुकून माहौल, इस्लामी लिबास, इस्लामी यूनिफार्म और इस्लामी तालीम के साथ-साथ कम ख़र्च में बिहार बोर्ड के निसाब के साथ मेयारी तालीम। ❸ यतीम तलबा जिनके वालिद का इन्तिक़ाल हो चुका है उनके क़याम-ओ-तआम के साथ-साथ एक बेटे की तरह यहां सारी सहूलत बिल्कुल मुफ़्त दी जाती है। ❹ बैरूनी तलबा के लिए अपने ख़र्च पर होस्टल का भी नज्म है। ❺ क़ौम के मुअज़्ज़िज़ हज़रात से गुज़ारिश है कि क़ौम के यतीम बच्चों को इदारा में दाख़िल कराने के लिए ज़हमत करें और तवज्जोह दिलाएं। ❻ इनायत आई.टी.आई. (I.T.I.) में यतीमख़ाना में पढ़ने वाले यतीम तलबा का दाख़िला, तालीम मअ-तआम-ओ-क़याम और रिहाइश बिल्कुल मुफ़्त है कोई ख़र्च नहीं लिया जाता है।

**इदारा आप से फ़राख़दिलाना तआवुन की अपील करता है।**

आप ख़ुसूसी तवज्जोह दें : मुल्क में लॉकडाउन (Lockdown) की वजह से आपका यह क़दीम इदारा माली बुहरान में मुबतला है। दुश्वारियों का सामना है। आमदनी घट कर कम हो गई है। यह साल भी मुल्क के दीनी इदारों के लिए ज़िन्दगी और मौत का सवाल बन गया है। ख़ुदारा यतीमख़ाने मदारिस और मसाजिद को बन्द होने से बचाइए। इन पर रहम कीजिए। अल्लाह आप पर रहम करेगा।

**Foreign Donors** ग़ैर-मुल्की चंदा दहंदगान

A/c Name : "The Gaya Muslim Orphanage"
Bank A/c No :
Bank Swift Code :
Bank :

Contact Us
For New Bank Account Details

नोट : बाहर मुल्क के हज़रात ऊपर लिखे हुए अकाउंट नम्बर पर अपनी रक़म डॉलर, रियाल और पाउंड वग़ैरह में भी भेज सकते हैं।

चेक व ड्राफ्ट पर सिर्फ यह लिखें : **"The Gaya Muslim Orphanage"**

बराए राबता (ख़त, चेक व ड्राफ्ट और मनी आर्डर भेजने का पता)
Hon. Secretary, The Gaya Muslim Orphanage
Cherki-824237, Distt. Gaya (Bihar) India

**Indian Donors :** भारतीय चंदा दहंदगान

A/c Name : The Gaya Muslim Orphanage — Bank A/c No. : 300402010010581
Bank : Union Bank of India (Main Branch, Gaya) — IFS Code No. : UBIN0530042

नोट : हिन्दुस्तानी सूबों और बाहर मुल्क में रहने वाले हज़रात हिन्दुस्तानी बैंक का चेक व ड्राफ्ट और रक़म हिन्दुस्तानी चंदा दहंदगान वाले अकाउंट नम्बर पर भेजें।

Mobile : 09801213022, 09955655960
E-mail : gmocde@yahoo.co.in / Website : www.gmogaya.in

नोट : Documentary Film - Nazr-e-Enayeth जिसमें दोनों यतीमख़ाना (Boys & Girls) की मुख़्तसर तारीख़ है, इंटरनेट You-Tube पर देखें।

नोट : रक़म कोर बैंकिंग और ऑनलाइन Online से भेजने वाले हज़रात मोबाइल या ई-मेल E-mail या डाक से मुकम्मल पता भेज दिया करें ताकि रक़म की रसीद रवाना की जा सके।

एज़ाज़ी नाज़िम डॉ॰ ज़ेड॰ एच॰ ख़ान  सदर डॉ॰ फ़रासत हुसैन






मुहम्मद यूसुफ़
'मुन्ना'

# लेखन : एक व्यापक क्षेत्र

लेखन हमेशा से एक व्यापक क्षेत्र रहा है। बदलते समय और संसाधनों के साथ लेखन के क्षेत्र में नई शाखाएं पैदा हुई हैं। कहा जाता है कि जहां अवसर होता है वहां प्रतिस्पर्धा होती है। यही इस क्षेत्र के साथ भी है। नये अवसरों के साथ प्रतिस्पर्धा भी बढ़ी है लेकिन उन लोगों के लिए नहीं जो मेहनत करने में विश्वास रखते हैं। लेखन में डिप्लोमा बारहवीं कक्षा के बाद किया जा सकता है। अपनी पसंद की भाषा से स्नातक, पत्रकारिता अथवा मास कम्युनिकेशन की शिक्षा के बाद भी इस क्षेत्र में कदम रखा जा सकता है। इसके अलावा स्नातकोत्तर करने के बाद किसी संस्था से प्रशिक्षण हासिल करके भी इस क्षेत्र में आया जा सकता है।



लेखन के क्षेत्र में डिग्री के साथ अनुभव की जरूरत होती है। प्रशिक्षण, अनुभव के साथ भाषा का अच्छा ज्ञान, अच्छी पकड़, संप्रेषण के नये तरीके और नये शब्दों का ज्ञान होना बहुत जरूरी है। लिखने के लिए पढ़ना बहुत ज़रूरी है। आम लेखन नहीं, बल्कि विचार प्रधान लेखन और साहित्य से जुड़ी सामग्री का अध्ययन बहुत ज़रूरी है। साथ ही सामयिक विषयों की जानकारी के साथ लेखन की नयी और बदली शैली से परिचय होना चाहिए। सूचना क्रान्ति के बाद जहां लेखक बनना आसान है, वहीं एक लेखक के रूप में खुद को स्थापित करना मुश्किल। इसके लिए धैर्य, संघर्ष और लगातार मेहनत करने की जरूरी है।

इंटरनेट के इस युग में कई लेखक अपनी वेबसाइट बना कर लेखन कार्य कर रहे हैं। इसके माध्यम से जहां वे विज्ञापनों के जरिये कुछ आय कर लेते

हैं, वहीं उनको इसके माध्यम से घर बैठे लेखन कार्य भी मिलता रहता है। देश और दुनिया के अनेक स्थापित और प्रसिद्ध लेखकों के ब्लाग भी हैं जिनपर नये और ज्वलंत विषयों पर उनके लेख प्रकाशित होते हैं। नये लेखकों के लिए इंटरनेट का संसार एक अवसर है। यहां से भी वे अपनी लेखन शैली का प्रदर्शन करके मार्केट में अपने लिए स्थान बना सकते हैं।

पहले जहां लेखन का दायरा पत्र, पत्रिका, किताबों और फिल्मों तक सीमित था, वहीं डिजिटल क्रान्ति आने के साथ ही न सिर्फ इसका दायरा बढ़ा है, बल्कि नये क्षेत्रों में इसके लिए संभावनाएं बढ़ी हैं। इंटरनेट युग के आगमन के बाद जैसे-जैसे लोगों तक इंटरनेट की पहुंच बढ़ी वेबसाइट्स, ब्लाग और यूट्यूब कार्यक्रमों की संख्या बढ़ती गयी। इससे नये लेखको लिए यहां काफी अवसर पैदा हुए। लेखन के मामले में पत्रकारिता हमेशा से एक व्यापक क्षेत्र है। यहां लेखकों के लिए कई स्तर पर हमेशा जगह होती है। काम के साथ उनको नाम, पहचान और सम्मान भी मिलता है। पत्रकारिता के क्षेत्र में स्तंभकार, फीचर लेखक, खेल, अर्थव्यवस्था, संपादक और उपसंपादक पदों पर रह कर लेखन कार्य किया जा सकता है। यदि लेखक किसी संस्था से जुड़ कर काम नहीं करना चाहता तो वह स्वतंत्र या खोजी पत्रकार के रूप में काम कर सकता है। स्क्रिप्ट राइटिंग के क्षेत्र में काफी संभावनाएं हैं। जरूरत सिर्फ यहां पहचान बनाने की है। यह क्षेत्र उन लोगों के लिए है जो कौतुहल से जीवन के प्रत्येक पक्ष को देखते हैं। एक स्क्रिप्ट राइटर को अपने लेख के व्यावसायिक पक्ष को हमेशा ध्यान में रखना होता है। रंगमंच, टीवी सीरियल और फिल्म में स्क्रिप्ट राइटर की हमेशा से मांग रही है।

वर्तमान में अनेक निजी टीवी चैनलों पर सीरियल की भरमार है। इसके साथ ही स्क्रिप्ट लेखकों की मांग भी है। इस क्षेत्र में उज्ज्वल भविष्य की तलाश की जा सकती है। विज्ञापन के क्षेत्र में कॉपीराइटिंग की जरूरत होती है। आज के समय विज्ञापन उद्योग काफी तरक्की कर चुका है। इसके अलावा बाजारों में बढ़ते उत्पादों के

**पहले जहां लेखन का दायरा पत्र, पत्रिका, किताबों और फिल्मों तक सीमित था, वहीं डिजिटल क्रान्ति आने के साथ ही न सिर्फ इसका दायरा बढ़ा है, बल्कि नये क्षेत्रों में इसके लिए संभावनाएं बढ़ी हैं। इंटरनेट युग के आगमन के बाद जैसे-जैसे लोगों तक इंटरनेट की पहुंच बढ़ी वेबसाइट्स, ब्लाग और यूट्यूब कार्यक्रमों की संख्या बढ़ती गयी। इससे नये लेखको लिए यहां काफी अवसर पैदा हुए। लेखन के मामले में पत्रकारिता हमेशा से एक व्यापक क्षेत्र है। यहां लेखकों के लिए कई स्तर पर हमेशा जगह होती है।**

साथ विज्ञापन का क्षेत्र बढ़ता ही जा रहा है। टीवी, अखबार, वेबसाइट आदि पर उत्पादों के प्रचार के लिए दिए जाने वाले विज्ञापनों के लिए कॉपीराइटिंग की जरूरत होती है, जो विज्ञापनों में प्रस्तुत की जाने वाली लेखन सामग्री को सारगर्भित और चुटीला बना कर पेश कर सकें। अगर लेखक के अंदर गागर में सागर भरने और अच्छा सेंस ऑफ ह्यूमर के साथ कुछ यादगार स्लोगन लिखने की क्षमता है तो उसके लिए कॉपीराइटिंग एक बेहतर पेशा हो सकता है। वेबसाइट क्रन्टेंट के क्षेत्र में लेखकों की भारी मांग है, जबकि माना यह जाता है कि पाठक वेबसाइट कन्टेंट या लेखन को पढ़ने से कहीं ज़्यादा सुनना या वीडियों के रूप में देखना पसंद करता है। स्क्रीन पर लंबे लेख पढ़ना काफी मुश्किल होता है, इसलिए वेबसाइट कन्टेंट को ऐसा बनाया जाता है जो पाठकों को बोर न होने दे और उनको बांधे रखे। पाठकों की सुविधा के लिए लेख को सबहेडिंग्स, बुलेट्स और सही पैराग्राफ्स में बांट कर प्रस्तुत किया जाता है।

यही कारण है कि अभी ऐसे पाठकों की बड़ी संख्या मौजूद है जो इंटरनेट पर अपलोड की जाने वाली सामग्री को पढ़ने मे विश्वास रखती है। इसके अलावा घोस्ट राइटर के क्षेत्र में किसी व्यक्ति द्वारा बताए गए तथ्यों को करीने से लिख कर अपना भविष्य संवारा जा सकता है। इस कार्य में सेलेब्रिटीज या नामचीन हस्तियों की जीवनियां, संस्मरण आदि लिखे जाते हैं। वैज्ञानिक शोधों और नयी खोजों पर कलम चलाया जा सकता है। यह काम चुनौतीपूर्ण है, क्योंकि लिखते समय इस बात का ध्यान रखना होता है कि विभिन्न वैज्ञानिक अध्ययनों के तथ्य एक दूसरे के विरोधाभासी न हों। इसके अलावा खेल, अर्थव्यवस्था, अपराध, सामाजिक दोष, आदि अलग-अलग विषयों पर लिखने के लिए काफी कुछ है।

बतौर एक लेखक कैरियर शुरू करने के बाद अपने स्वाभाव और रूचि के अनुसार एक लेखक खुद ही तय कर लेता है कि उसको किन विषयों पर लिखना चाहिए। अगर स्वंय की पसंद के क्षेत्र में उसको लेखन करने का अवसर मिल जाए तो सफलता की संभावना काफी बढ़ जाती है। ■■



**इतिहास के झरोखे से**



**डॉक्टर अब्दुर रशीद अगवान**

# शक, भारत और इस्लाम

इतिहास में शक या सीथियन लोगों का बड़ा नाम रहा है। कभी इनका दबदबा सेंट्रल एशिया, ईरान, अफ़ग़ानिस्तान, पंजाब, उत्तर भारत, सिंध, सौराष्ट्र और मालवा तक रहा है। मगर धीरे-धीरे इनका इतिहास धुंधला होता चला गया और ये स्थानीय आबादियों में इस तरह घुल-मिल गए कि अब इनकी अलग से पहचान मुश्किल है। कई इतिहासकार तुर्की के कुर्दों, अफ़ग़ानिस्तान के कई क़बीलों और भारत के जाटों को शकों की नस्ल से जोड़ते हैं। दुनिया को इनकी सबसे बड़ी देन, घोड़ों और रथों का फ़ौजी इस्तेमाल है।



सेंट्रल एशिया से निकल कर शकों ने सिंधु नदी के इस पार कई बार अपनी सत्ता क़ायम की और भारत को बहुत कुछ दिया।

भारत में शक शासकों की अहमियत इसी एक हक़ीक़त से समझ में आ सकती है कि उन्होंने देश को सरकारी तौर पर मंज़ूरशुदा 'शक' कैलेंडर दिया। आज़ादी के बाद, 22 मार्च 1957 यानी 1 चैत्र 1879 शक संवत् से इसकी हैसियत क़ानूनी हो गई है। इस कैलेंडर की शुरुआत शक राजा नाहपनाह या सिस्तान की 78 ईसवी में उज्जैन के राजा पर जीत की याद में हुई थी। इस जीत के बाद, शक राजाओं ने सिंध से लेकर उज्जैन तक के एक बड़े इलाक़े पर क़रीब दो सौ सालों तक हुकूमत की। सिस्तान के बेटे जयदमन और पौते रूद्रदमन भी उज्जैन के मशहूर क्षत्रप शासक रहे। सातवाहन राजाओं या सम्राट चंद्रगुप्त से हारने के बाद भारत में इनकी सत्ता कुछ सदियों के लिए ख़त्म हुई मगर फिर ग्यारहवीं सदी से इनका एक नया दौर आया।

पांचवीं सदी ईसा पूर्व में भी शकों ने उत्तरी भारत में अपने राज्य क़ायम किये। शाक्य मुनि के नाम से मशहूर और बौद्ध धर्म के बानी सिद्धार्थ गौतम बुद्ध का संबंध भी शकों से था।

शक सेनाओं ने भारत उपमहाद्वीप में कई बार हमले किये, सिंधु नदी के उस पार कभी शकिस्तान भी बनाया और सिंधु नदी के इस पार एक बड़े इलाक़े पर अपनी हुकूमत क़ायम की और उनमें से ज़्यादातर यहीं बस गये। शकिस्तान में गुजरात, राजस्थान और पंजाब का एक हिस्सा भी शामिल था। आमतौर



पर शक क़बीलों को ईरानी माना जाता है, मगर आज उनकी नस्लों को अलग से पहचानना भी मुश्किल है। मगर इतिहास में घोड़ों को साधने और उन्हें जंगी हमलों में इस्तेमाल का हुनर क़रीब चार हज़ार साल पहले इन्होंने ही शुरू किया था। वैसे पहली सदी ईसा पूर्व के मोगा को भारत का पहला शक राजा माना जाता है जिन्होंने गांधार को अपनी राजधानी बनाया था और मथुरा तक उनकी हुकूमत थी।

बाद में शक क़बीलों ने इस्लाम क़ुबूल कर लिया और महमूद गज़नवी, मुहम्मद ग़ौरी और दिल्ली सुल्तानों के रूप में उन्होंने सिंधु नदी के दोनों ओर फिर से अपनी हुकूमत क़ायम की। उस दौर की संस्कृत में लिखी गई किताबों में इन सभी को त्रुस्का (तुर्की), ताजिकेश (ताजिक राजा) शकेंद्र और शकाधिराज (शक राजा) या सुरतान (सुल्तान) कहा जाता था। मिसाल के तौर पर 1276 के पालम बावली इंस्क्रिशन में दिल्ली के सुल्तानों को शकेंद्र यानी शक राजा बताया गया है।

शकों ने अलग-अलग दौर में अलग धर्मधारा को अपनाया। कभी वे आग की पूजा करने वाले ज़रथ्रुस्त थे, कभी वे बौद्ध हुए, कभी उनमें ऐसे भी रहे हैं जो पौराणिक आस्था के साथ गए और बहुतों ने इस्लाम को अपनाया। इस वक़्त ज़्यादातर 'हिंदू' जाट आर्यसमाजी हैं।

अगर कुछ विचारकों की राय को सामने रखा जाए तो क़ुरआन में जिस ज़ुल-किफ्ल नबी का ज़िक्र है वो शक राजकुमार गौतम बुद्ध हो सकते हैं। उनका मानना है कि ज़ुल-किफ्ल (किपल वाले) कोई नाम नहीं बल्कि एक इशारा है कि वो हस्ती जिसका संबंध कपिलवस्तु से था। अगर यह बात सही है तो शकों का संबंध इस्लामी परंपरा से बहुत पुराना है।

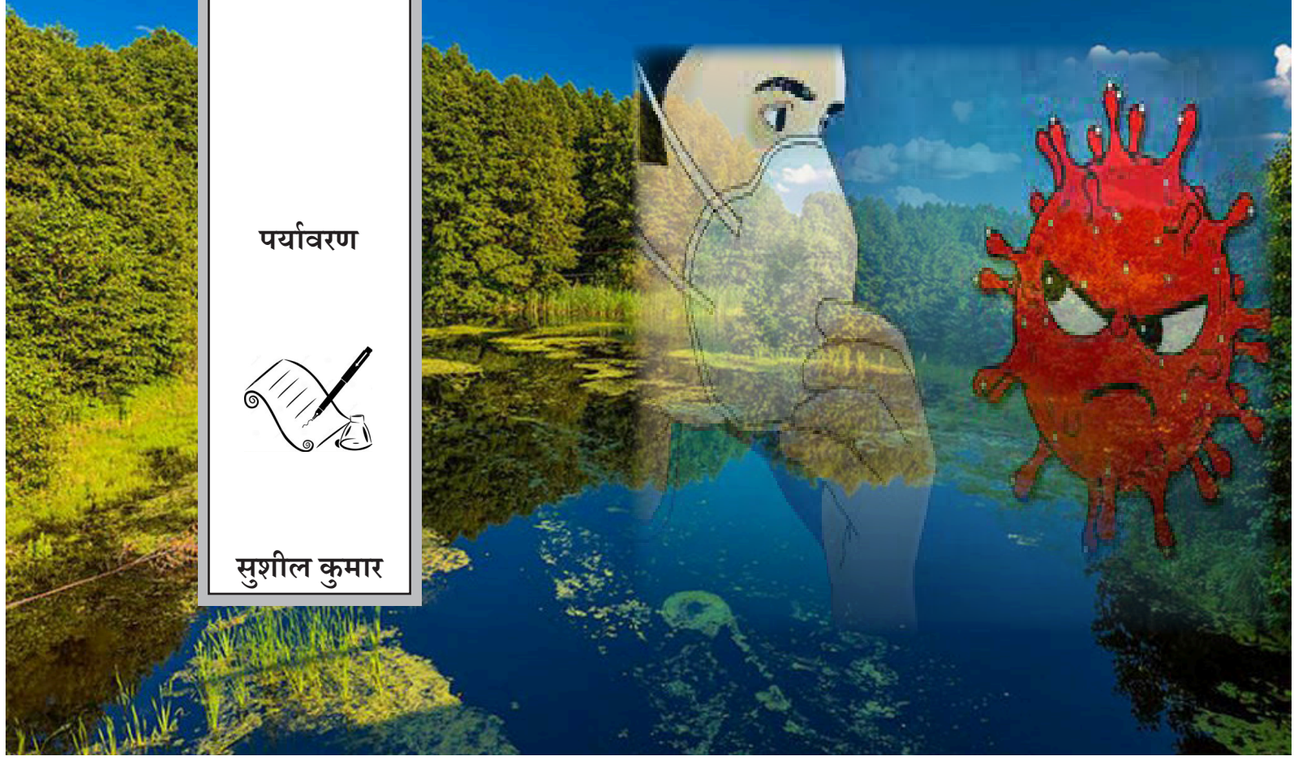
भारत में जाट जातियां या तो आर्य मानी जाती हैं या शक-सीथियन। ख़ुद शब्द 'जाट' और 'जाति' शक भाषा से आये हैं। अभी हाल ही में जाटों के 302 वाई क्रोमोसोम हैप्लोग्रुप की एक जेनेटिक रिसर्च में यह बताया गया है कि जाट जातियों के डीएनए का संबंध दुनिया के कई इलाक़ों से है। 1931 की सेंसस के मुताबिक़, 47% जाट जातियों को हिंदू माना गया, 33% को मुस्लिम और 20% को सिख। हरियाणा में मुस्लिम जाटों को "मुल्ला जाट" कहा जाता है।

जब सातवीं सदी में मक्का में सनातन इस्लाम को एक नये रूप में पेश किया जा रहा था तो उस वक़्त अरब में बसे बहुत-से जाटों ने इस्लाम क़ुबूल किया था। जाट को अरबी में ज़ुत कहते हैं और कई हदीसों में इसका ज़िक्र हुआ है। मसलन बुख़ारी की हदीस (3438) में हज़रत मुहम्मद (सल्ल.) ने हज़रत मूसा के बारे में बताया कि उनका रंग तांबई था, बाल सीधे थे और क़द लंबा था "जैसे कि वे अज़-ज़ुत में से हों।"

**शक क़बीलों ने इस्लाम क़ुबूल कर लिया और महमूद गज़नवी, मुहम्मद ग़ौरी और दिल्ली सुल्तानों के रूप में उन्होंने सिंधु नदी के दोनों ओर फिर से अपनी हुकूमत क़ायम की। उस दौर की संस्कृत में लिखी गई किताबों में इन सभी को त्रुस्का (तुर्की), ताजिकेश (ताजिक राजा) शकेंद्र और शकाधिराज (शक राजा) या सुरतान (सुल्तान) कहा जाता था। मिसाल के तौर पर 1276 के पालम बावली इंस्क्रिशन में दिल्ली के सुल्तानों को शकेंद्र यानी शक राजा बताया गया है।**

शकों के इतिहास की इस झलक से एक बात बिल्कुल साफ़ हो जाती है कि लोगों की आस्था और उनकी नस्ल का कोई सीधा संबंध नहीं होता है। देशों की सीमाएं बनती और बिगड़ती रहती हैं और इसी तरह लोगों की आस्थाएं भी बदलती रहती हैं। इसलिए इतिहास किसी 'सांस्कृतिक राष्ट्रवाद' के विचार को कोई मान्यता नहीं देता है। ■■





पर्यावरण



सुशील कुमार

# कोविड ने हमें पर्यावरण के प्रति कितना संवेदनशील बनाया?

यह साल मानव सभ्यता के इतिहास में काफ़ी दुखद साल रहा, ख़ास तौर पर भारत के संदर्भ में। वैसे पिछला साल यानी 2020 भी काफ़ी बड़े स्तर पर तबाही भरा साल रहा था। यह देखा गया कि कोरोना महामारी के कारण बड़े-बड़े तथाकथित विकसित देशों के क़ब्रिस्तानों में भी जगह नहीं बची। हमारे देश भारत में भी भयावह स्थिति रही। यहां लगभग 4 लाख लोगों को अपनी जान इस महामारी में गंवानी पड़ी। लेकिन हम सभी यह महसूस करते हैं कि मृत्यु का आंकड़ा इससे कहीं ज़्यादा है। इन सब दुखदायी घटनाओं के बीच एक अच्छी चीज़ जो हुई वह थी पर्यावरण को होने वाला फ़ायदा।

लॉकडाउन के कारण भारत के कई राज्यों में नदियां अचानक साफ़ हो गईं जिनके प्रदूषण को दूर करने के लिए सालों से सरकार असफल प्रयास कर रही थी। जैसे यमुना का पानी जो हमेशा काला एवं झाग भरा ही रहता था, आज साफ़ बह रहा है। यही कहानी देश की कई नदियों की है। लॉकडाउन के दौरान लोग घरों के अंदर रहे और वाहनों की आवाजाही कम रही, फ़ैक्ट्रियां बंद रहीं, जिससे हवा एकदम शुद्ध हो गई और काफ़ी लोगों ने अपने घरों से सैकड़ों किलोमीटर दूर के पहाड़ों के साफ़-साफ़ दिखाई देने का दावा भी किया। लॉकडाउन के बाद रुक-रुककर लगातार बारिश हो रही है जिससे हवा में मौजूद एयरोसोल नीचे आ गए। एयरोसोल



**लॉकडाउन के कारण एक और अच्छी चीज़ हुई है - वर्क फ़्रॉम होम। इसको जहां तक संभव हो बरक़रार रखना चाहिए। इसके अलावा हर छोटे-बड़े दुकानदार को तकनीकी ज्ञान बढ़ाने का भी प्रयास करना चाहिए ताकि वह ऑनलाइन आर्डर ले सके। यह सारी चीज़ें लॉकडाउन के दौरान हम लोगों ने की हैं और हमें यह भी एहसास हुआ है कि हम ग़ैर-ज़रूरी रूप से बाहर भी नहीं निकलेंगे।**

लिक्विड और सॉलिड से बने ऐसे सूक्ष्म कण होते हैं जिनके कारण फेफड़े और हृदय को बहुत नुक़सान पहुंचता है। एयरोसोल की वजह से विज़िबिलिटी घटती है। जिन शहरों के एयर क्वालिटी इंडेक्स ख़तरे के निशान से बाहर थे वहां का आसमान भी नीला दिखने लगा।

लेकिन मुद्दा यह है कि हम सभी जानते हैं कि पर्यावरण को लॉकडाउन के कारण फ़ायदा हुआ है और हम सभी यह भी जानते हैं कि लॉकडाउन एक सीमित समय से ज़्यादा रखा भी नहीं जा सकता और लॉकडाउन ख़त्म होने के बाद फिर धीरे-धीरे चीज़े अपने पुराने ढर्रे पर चली जाएंगी। वही गाड़ियों की आवाजाही और फ़ैक्ट्रियों से निकलने वाला धुआं, वही ट्रैफ़िक जाम और वही ग्रीनहाउस गैसों का उत्सर्जन। जिस तरह मौजूदा समय में जान बचाना लोगों की प्राथमिकता बनी हुई है वैसे ही लोगों को पर्यावरण के प्रति चिंतित कराया जाना ज़रूरी है। उनको यह बताया जाना भी ज़रूरी है कि पर्यावरण रहेगा तभी हम ज़िंदा रह पाएंगे। इसलिए हम लोगों को अपनी आदतों को बदलना होगा।

जैसे हम सभी स्वेच्छा से सप्ताह में एक दिन लॉकडाउन रखें और एक दिन किसी मोटर वाहन के बजाय साइकिल से चलें। हम कोशिश करें कि अपनी कार होने के बावजूद जहां तक संभव हो बस या ट्रेन में सफ़र करें।

लॉकडाउन के कारण एक और अच्छी चीज़ हुई है – वर्क फ़्रॉम होम। इसको जहां तक संभव हो बरक़रार रखना चाहिए। इसके अलावा हर छोटे-बड़े दुकानदार को तकनीकी ज्ञान बढ़ाने का भी प्रयास करना चाहिए ताकि वह ऑनलाइन आर्डर ले सके। यह सारी चीज़ें लॉकडाउन के दौरान हम लोगों ने की हैं और हमें यह भी एहसास हुआ है कि हम ग़ैर-ज़रूरी रूप से बाहर भी नहीं निकलेंगे।

हम सभी जानते हैं कि पर्यावरण पर बहुत बड़ा संकट मंडरा रहा है और पर्यावरण संकट का अर्थ है हमारे अस्तित्व पर संकट। लॉकडाउन में जो भी चीज़ें ठीक हुई हैं, वे भले ही थोड़े दिन के लिए हैं लेकिन अनजाने में इस लॉकडाउन ने हमें समझा दिया है कि अगर हम एक साथ चाहें तो अभी भी अपने पर्यावरण को बचा सकते हैं। हमारे शरीर को शुद्ध हवा चाहिए, शुद्ध पानी चाहिए, हमारा कान एक निश्चित डेसिबल से अधिक नहीं सुन सकता, हमारे शरीर में विभिन्न माध्यमों से नुक़सानदायक केमिकल प्रवेश कर रहे होते हैं जो हमें भीतर से नुक़सान पहुंचाते हैं और जिसके कारण हम बहुत तरह की बीमारियों से ग्रसित होते जा रहे हैं।

हमें समझना होगा कि यह हमारा ही शरीर है, हमारा ही परिवार है, हमारा ही देश है और हमारी ही दुनिया है, इसलिए हमें ख़ुद इसके लिए जागरूक होना पड़ेगा। ■■






# संकट प्रबंधन, कोरोना महामारी के संदर्भ में

सरकार, उसकी नीतियों और राजनेताओं (चाहे वे सत्ता पक्ष के हो या विपक्ष के), के ग़लत पक्षों की आलोचना करना ग़लत नहीं है। लोकतांत्रिक प्रणाली में, आलोचना हमेशा राज्य को कार्यकुशल बनाती है। आलोचना सिर्फ़ आलोचना के इरादे से करना भी ठीक नहीं है, बल्कि हम आलोचना इस इरादे से करें कि वह राज्य को कुशल बनाने में हमारा सहयोग कर सके। विभिन्न दल सत्ता में आते-जाते रहते हैं लेकिन नीतियां, कृत्य और नियम उसी तरह जारी रहते हैं और जनता को प्रभावित करते हैं।

मानव इतिहास में महामारी से पैदा हुआ संकट नया नहीं है। इससे पहले भी हमने इस प्रकार की महामारियों का सामना किया है। कई राष्ट्र इन आपदाओं से बाहर आए हैं और अपने देश को बेहतर तरीक़े से विकसित किया है। लॉकडाउन के बाद खेती, कपड़ा, प्रौद्योगिकी, चिकित्सा के क्षेत्र आदि जैसे प्रत्येक सेक्टर में मंदी आने की पूरी संभावना है। व्यापक मंदी के इस संकट की संभावना को जानने और यह समझने के बाद कि इसका आम नागरिकों पर बड़ा प्रभाव पड़ सकता है, विशेषकर सरकारों व निजी हितधारकों को अपने हिस्से का योगदान देना चाहिए।

संकट से बचने के उपायों पर चर्चा से पहले यह जानना अत्यंत आवश्यक है कि आखिर 'संकट' है क्या?

इस तरह का संकट कैसे अपनी जगह बनाता है या फैलता है? इसके बहुत आसानी से समझ आ जाने वाले कारण हैं जैसे:

संकट कैसे शुरू होता या पनपता

**भारत की लगभग 60% आबादी आर्थिक रूप से कृषि पर निर्भर है अतः यह ज़रूरी है कि केंद्र सरकार MSP पर फ़सलों की कटाई को सक्षम बनाने के लिए आवश्यक क़दम उठाए। किसानों से सभी प्रकार की वसूली को छह महीने की अवधि के लिए निलंबित करने और ऋण अदाएगी में उदारता व राहत देने पर विचार करने का भी यही सही समय है।**

है? प्रारंभिक चेतावनी के बाद भी राज्य और उसके हितधारकों की लापरवाही और सुस्ती के कारण या शुरुआती चरणों में संकट से निपटने में संसाधनों का उपयोग नहीं करने और नुक़सान पहुंचाने से पहले प्राथमिकताओं को निर्धारित न करने के कारण यह फैलता है और बड़े पैमाने पर नुक़सान की भूमिका बनाता है।

### संकट प्रबंधन

यह किसी व्यक्ति, संगठन, राज्य को महामारी जैसे संकट के समय बचाने की एक व्यवस्था है यह एक ऐसा तरीक़ा है जो संकट से जूझ रहे नागरिकों को इस संकट से निकालती है और विश्वसनीयता, निष्पक्षता और पारदर्शिता की गारंटी भी इस दौरान दी जाती है।

### समाधान

**संरक्षणवादी होने के बजाय संसाधनों को साझा करना :** इस संबंध में हमें इस्लाम के अंतिम दूत हज़रत मुहम्मद (सल्ल.) के जीवन के कई उदाहरणों से संकट प्रबंधन को स्पष्ट तरीक़े से समझने में मदद मिलेगी। ईश्वर की आज्ञाओं का पालन करने वाले व्यक्ति और उनके उल्लंघन करने वालों की तुलना में प्रतिबंधों का उदाहरण उन व्यक्तियों के उदाहरणों की तरह है जिन्होंने नाव में अपने स्थान को पाने के लिए बहुत कुछ किया। उन व्यक्तियों के उदाहरण की तरह, जिन्होंने नाव में अपनी सीटों के लिए बहुत कुछ आकर्षित किया। जब निचले हिस्से वालों को पानी की ज़रूरत पड़ी, तो उन्हें पानी लाने के लिए ऊपर जाना पड़ा, (दूसरों को मुसीबत में डालकर) तो उन्होंने ख्याल किया कि क्यों न हम अपने हिस्से में पानी के लिए एक छेद कर दें और पानी पा लें बिना ऊपर वालों को बार-बार परेशान किए, यदि ऊपरी हिस्से के लोग निचले हिस्से के लोगों की मदद करते हैं और उन्हें ऐसा करने से रोकते हैं तो नांव में सवार सब लोग सुरक्षित रहेंगे अन्यथा सब ख़त्म हो जाएगा। इस उदाहरण से हम ये समझ सकते हैं कि कोरोना जैसी महामारी के कारण चल रहे लॉकडाउन के दौरान हमें अपने पड़ोसियों,ग़रीबों, मज़दूरों की सहायता करनी चाहिए।

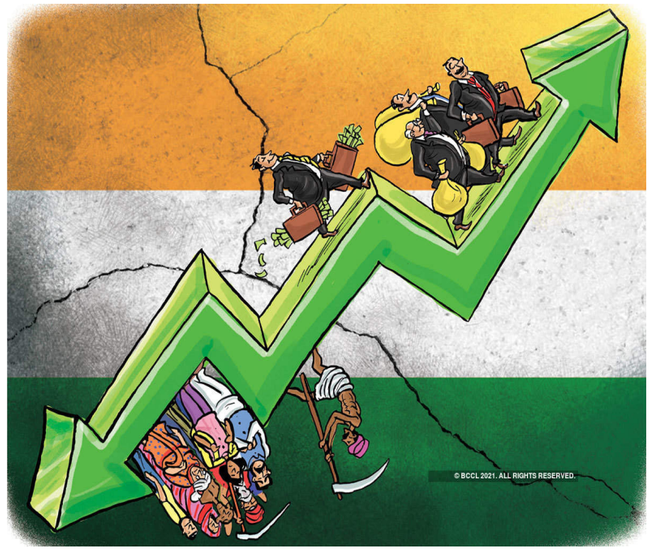
**सीमित संसाधनों के साथ संकट से बचाव :** इस्लाम के पैग़म्बर हज़रत युसूफ़ ने मिस्र में संकट का सामना करने के लिए दीर्घकालिक योजना के आधार पर एक सुधारवादी नीति पेश की थी और यह हमारे लिए वर्तमान स्थिति में भी उदाहरण बन सकती है। यह नीति चार आर्थिक संचालनों पर आधारित थी–

1. उत्पादन, 2. उपभोग, 3. बचत और 4. पुन: निवेश (बचत का हिस्सा)। उन्होंने प्रत्येक आर्थिक प्रक्रिया के उद्देश्यों, उनकी महत्ता, उनकी नीतियों तथा उनको लागू करने की योजना को बिना नैतिकता के ह्रास के साथ प्रस्तुत किया था।

मिस्र के राष्ट्रपति को पैग़म्बर यूसुफ़ द्वारा दी गई समाधान की नीति के पीछे फ़लसफ़ा यह था, "सात बरस तक लगातार तुम लोग खेती-बाड़ी करते रहोगे। इस अवधि के दौरान जो फ़सलें आप काटो उनमें से बस थोड़ा सा हिस्सा, जो तुम्हारी ख़ुराक के कम आए, निकालो और शेष भाग को उसकी बालियों में ही रहने दो। फिर सात बरस बहुत कठिनाई भरे होंगे, उस ज़माने में वो सब अनाज खा लिया जाएगा जो तुम उस समय के लिए जमा करोगे अगर कुछ बचेगा तो बस वही जो तुमने बचाकर रखा था (अल-क़ुरआन)।

**कृषि क्षेत्र का संरक्षण :** भोजन हर व्यक्ति की बुनियादी ज़रूरत है और यह कई राज्यों में अर्थव्यवस्था की रीढ़ है। बड़ी काश्तकारी और खेती के अलावा, लॉकडाउन के कारण लोगों को निम्न स्तर पर घर आधारित खेती शुरू करने की आवश्यकता होती है, ऐसे में सब्जियां, फल, अनाज आदि की खेती हो सकती हैं। कई लोगों के पास उपजाऊ ज़मीन हो सकती है, ख़ासकर गांवों में; इसका उपयोग खेती के लिए किया जा सकता है जो न केवल अल्पकालिक लक्ष्यों को पूरा करेगा, बल्कि अर्थव्यवस्था में भी योगदान देगा। सोनिया गांधी ने भारत के प्रधानमंत्री को सुझाव दिया कि "कटाई के मौसम के चरम पर यह लॉकडाउन लागू हुआ है। कृषि फ़सल मार्च के अंत तक अधिकांश राज्यों में कटाई के लिए तैयार है। यद्यपि भारत की लगभग 60% आबादी आर्थिक रूप से कृषि पर निर्भर है अतः यह ज़रूरी है कि केंद्र सरकार MSP पर फ़सलों की कटाई को सक्षम बनाने के लिए आवश्यक क़दम उठाए। किसानों से सभी प्रकार की वसूली को छह महीने की अवधि के लिए निलंबित करने और ऋण अदाएगी में उदारता व राहत देने पर विचार करने का भी यही सही समय है।

**लघु उद्योग का समर्थन :** COVID-19 महामारी के कारण छोटे व्यावसायों को भी महत्वपूर्ण आर्थिक प्रभावों का सामना करना पड़ेगा। सरकार को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि SIDBI द्वारा एसएमई के लिए उद्यमियों को पहले से अधिक अनुकूल शर्तों पर ऋण प्रदान करने जैसे क़दम उठाए जिससे इसके प्रभाव को कम किया जाए।




बड़ी फर्में भी अपने पैसे को चैनलाइज़ करने के लिए छोटे सप्लायर्स को राशि देकर बॉन्ड मार्केट से पैसा उगाही करने का एक उपयुक्त रास्ता खोज सकती हैं।

–रघुराम राजन
(पूर्व, आरबीआई गवर्नर)

किसानों, छोटे विक्रेताओं, व्यापारियों और उद्योगपतियों को सभी संभावित बांडों (जैसे लाभ और हानि के आधार पर, शेयरधारकों को) के साथ ब्याज-मुक्त ऋण देना महामारी के उपरांत अल्पावधि में ही अर्थव्यवस्था को स्थिर करने में बड़ी राहत होगी।

**उपलब्ध संसाधनों का समुचित उपयोग :** ख़र्चों में कटौती, COVID-19 के ख़िलाफ़ लड़ने के लिए आवश्यक धनराशि को एकत्र करने का बड़ा साधन और समय की महत्वपूर्ण आवश्यकता है। इस संबंध में, लॉकडाउन अवधि के दौरान विभिन्न घटनाओं, केंद्र व राज्य मंत्रिमंडल के मंत्रियों के लिए आवंटित यात्रा व्यय (अंतर्राज्यीय, देश और विदेश यात्राओं में) को कोरोना महामारी से लड़ने में ख़र्च किया जाए।

सड़क के किनारे केंद्र व राज्य सरकारों की योजनाओं के प्रचार के लिए लगने वाले होर्डिंग्स-विज्ञापनों पर ख़र्च किए जा रहे फंड को तत्काल प्रभाव से रोका जाना चाहिए क्योंकि जनता सड़कों पर नहीं है।

केंद्र व राज्य सरकारों तथा पीएसयू द्वारा कम से कम दो साल की अवधि के लिए मीडिया विज्ञापनों (इलेक्ट्रॉनिक, प्रिंट और सोशल मीडिया) पर पूर्णतया प्रतिबंध लगना चाहिए।

परीक्षाओं के संचालन पर व्यय होने वाली धनराशि को अधिकृत निजी स्कूलों को भेजा ताकि वो संस्थान बदले में अगले शैक्षणिक वर्ष के लिए छात्रों से 30% फीस कम वसूलें।

**एक गांव को गोद लें :** यदि प्रत्येक एमएलए/एमएलसी, सांसद (राज्यसभा और लोकसभा दोनों), उद्योगपति/व्यावसायी, सेलिब्रिटी (फ़िल्म और खेल) और ग़ैर-सरकारी संगठन कम से कम तीन साल के लिए एक गांव को गोद लेते हैं, तो देश भर के कम से कम 15,000 गांवों/क्षेत्रों का विकास किया जा सकता है और यह शेष दुनिया के एक महान उदाहरण हो सकता है।

इसी तरह विभिन्न विभाग सभी संभावित तरीक़ों से संकट से निपटने के उपाय कर सकते हैं। इसमें कोई संदेह नहीं है कि स्वास्थ्य क्षेत्र प्राथमिकता है और इसे छोड़ा नहीं जाना चाहिए, हर संभव समर्थन और आवश्यकताओं की पूर्ति किया जाना चाहिए। आइए! संकट की इस घड़ी में एक-दूसरे का समर्थन करने के लिए आगे आएं, ताकि आने वाली पीढ़ियों को शांतिपूर्ण, नफ़रत मुक्त और न्याय की व्यवस्था प्रदान की जा सके।

■■

कहानी



रशीद जहाँ

# चोर

रात के दस बजे का वक़्त था। मैं अपनी क्लीनिक में अकेली बैठी थी और एक मेडिकल जनरल पढ़ रही थी कि दरवाज़ा खुला और एक आदमी एक बच्चा लेकर अंदर आया। मुझको अपनी नर्स पर ग़ुस्सा आया कि यह दरवाज़ा खुला छोड़ गई। मेरे मरीज़ देखने का वक़्त बहुत देर पहले ही ख़त्म हो चुका था मैंने रुखाई से कहा।

"मेरे मरीज़ देखने का वक़्त मुद्दत हुई ख़त्म हो चुका, या तो कल सुबह लाना, वरना किसी दूसरे डॉक्टर को दिखा दो।"

मर्द छोटे क़द का तो था, लेकिन बदन कसरती था और बच्चा जो गोद में था उसकी सांस बुरी तरह से चल रही थी और साफ़ ज़ाहिर था कि निमोनिया हो गया है। मर्द ने अकड़ कर कहा!

"मैम साहब फ़ीस ले लीजिए और क्या आपको चाहिए!"

मैं उसकी अकड़ से चिढ़कर बोली "फ़ीस के बग़ैर कोई डॉक्टर देखता है? मैं इस वक़्त मरीज़ नहीं देखती। तुम को मालूम होना चाहिए कि यह वक़्त डॉक्टरों के आराम का होता है। दूसरे तुम्हारा बच्चा बहुत बीमार है...।"

"तभी तो आपके पास लाया हूं। हमारी साली का बच्चा तो और भी बीमार था आपके इलाज से अच्छा हो गया।" अब उसका बात करने का ढंग नम्रतापूर्वक था।

मैने बिगड़ कर कहा, "जो मेरा इलाज कराना था तो जल्दी आते!"

"कोई दूसरा लाने वाला ही न था, और मैं इससे पहले नहीं आ सकता था।"

उसकी कनपटी पर ज़ख़्म का एक गहरा निशान था! इतना बदमिज़ाज आदमी ज़रूर किसी मार-पीट में ज़ख़्मी हुआ होगा!

बच्चे ने बिल्कुल मुर्दा आवाज़ में रोना शुरू किया! जिसको देखकर मुझको तरस आ गया और मैं आला निकाल कर खड़ी हो गई। मर्द ने फ़ौरन कमीज़ की जेब से दस रुपये का नोट निकालकर मेज पर रख दिया। बच्चे को देखकर मैंने कहा "एक इंजेक्शन तो मैं फ़ौरन लगाए देती हूं, चार रोज़ तक बराबर यह इंजेक्शन चार-चार घंटे पर लगेंगे। इंतज़ाम कर लेना।" उसकी ग़रीबी की तरफ़ निगाह करके मैंने कहा, "फ़ीस की ज़रूरत नहीं इंजेक्शन की क़ीमत मैं ले लूंगी, बाक़ी की दवाएं तुम बाज़ार में बनवा लो।"

उसने फिर अकड़ कर कहा! "साहब मैं ख़ैरात का इलाज नहीं कराता!" उसने



अपने कुर्ते के अन्दर हाथ डाला और एक अंगोछा निकाला! इतने में टेलीफ़ोन की घंटी बजी, मैंने रिसीवर उठाया और साथ ही निगाह उस मर्द पर पड़ी, वह गांठ खोल रहा था और मैं हैरान रह गई। जब उसने एक मोटी-सी गड्डी नोटों की निकाली, कम से कम पांच सौ के नोट होंगे और दस रुपये का मेज पर रखकर बोला।

"बस या और चाहिए!"

मैंने टेलीफ़ोन का जवाब दिया "हां! हां! हां!" उसकी तरफ़ संबोधित हुई और पूछा, "तुम्हारा क्या नाम!"

"कम्मन" कहकर ज़रा झिझका!

"कम्मन" यह नाम तो कहीं मैं सुना था! हां याद आया! दरोग़ा जब मेरे यहां चोरी की तहक़ीक़ात करने आया तब उसने कम्मन का नाम लिया था और पुलिस वाले आपस में बात करने में कम्मन की कनपटी के निशान की बात भी कर रहे थे। मैंने उसकी तरफ़ ग़ौर से देखा, वह लापरवाही से एक तरफ़ देख रहा था मैंने इंजेक्शन तैयार करना शुरू किया और पूछा "तुम्हारा पेशा क्या है?"

वह जवाब देने ही वाला था कि मैंने जवाब दिया। "तांगा चलाते थे न!"

"आपको कैसे मालूम?" उसने हैरत से पूछा। "आपने मुझे कहां देखा? मैं तो पहले कभी आपके यहां नहीं आया।"

मैं सिरिंज में दवा भर कर बोली, "कम्मन, तुम भूलते हो। अभी दो महीने हुए एक रात के बीच तुम आये थे और मेरा घर साफ़ करके चल दिये। तुम चोरी क्यों करते हो...?"

उसने आंख में आंख डालकर बराबरी से जवाब दिया। "मेम साहब, अपना-अपना पेशा है।"

अब मेरी बारी हैरान होने की थी।

"पर यह तो बताइए कि मेरा नाम



किसने आपको बताया?"

"दारोग़ा जो तहक़ीक़ात करने आये थे वह लोग आपस में तुम्हारे कारनामों की बातें कर रहे थे। मैंने भी सुन लिया और तुम्हारे यहां तलाशी भी तो हुई थी।"

वह पुलिस वालों को गालियां देने लगा।

"यह सारे पुलिस वाले मादर... पहले अपना हिस्सा वसूल कर लेते हैं फिर हमारा हिस्सा हमको मिलता है। बहन...हमको यह बदनाम करते हैं। चोर से कहें चोरी कर और शाह से कहें तेरा घर लुटता है...बेटा...दारोग़ा को मैं समझ लूंगा...मेरे घर मेम साहब साल में सैकड़ों बार दौड़ आती है। पर यही पुलिस वाले मुझे पहले से ख़बर देते हैं। सब सालों के महीने नहीं बांध रखे हैं। पांच साल से बराबर वारंट मेरे नाम जारी रहता है पर ख़ुदा का फ़ज़्ल है कि अभी तक तो पकड़ा नहीं गया।" उसने शेखी के अंदाज़ में मुझे अपना हाल बताया।

मैंने इंजेक्शन लगाने को बच्चे की टांग पकड़ी। पर वह बड़बड़ाता ही रहा।

"ख़ुद साले आकर बता जाते हैं कि तलाशी लेने आ रहे हैं। मेम साहब, पुलिस अगर हमारा साथ न दे तो हम दो दिन किसी इलाक़े में टिक नहीं सकते... और फिर हमीं को बदनाम करते हैं।"

"देखो बच्चे की टांग मत हिलने दो।"

"साले आधे से ज़्यादा तो वह ख़ुद खा जाते हैं। हमको बचता ही क्या है। सारी मेहनत हम करें, पकड़े जाएं तो हम जेल की चक्की पीसें तो हम, यह मादर... तो घर बैठे मुफ़्त का माल उड़ाते हैं।"

उसका चेहरा ग़ुस्से से लाल हो गया। और बच्चे के रोने की भी जो धीमे-धीमे सिसक रहा था, उसने परवाह न की। मैंने बच्चे को मेज पर लिटा कर थपकना शुरू किया। अब उसमें और मुझमें बेतकल्लुफ़ी होती जा रही थी। और मैं उससे बातें करना चाहती थी, मैं पहली बार एक चोर से और वह भी

ऐसा चोर जो मेरा अपना घर साफ़ कर चुका था मिली थी। मैंने कहा "कम्मन, तुम चोरी करते हो। तुमको तरस नहीं आता। मेरा घर तो तुमने बिल्कुल साफ़ कर दिया। पहनने तक का कपड़ा नहीं रहा। ऐनकों का तुमको क्या मिल जाता होगा। भला बताओ मेरी ऐनक भी तुम ले गये।"

"कोई चीज़ बेकार नहीं जाती।"

मैंने उसकी तरफ़ हैरत से देखकर कहा और मेरी मां की भी निशानी एक दुपट्टा रखा था वह भी तुम ले गये।

"उसको पकड़वा दूं?" मेरे दिल में आया।

"कौन सा?"

"सफ़ेद जाली का कढ़ा हुआ था। तुमको याद होगा। मालूम जब से अब तक कितनी चोरियां कर चुके होगे।"

मैं इसको बातों में लगाने की कोशिश कर रही थी। "तुमने चोरी कैसे शुरू की?"

क्या मैं बिजली का बटन दबा कर नौकरों को बुला लूं!

"जैसे सब करते हैं। अपने उस्ताद से सीखी।"

"उस्ताद से? तुम्हारे यहां भी उस्ताद होते हैं।"

"और क्या! आपने डॉक्टरी कैसे सीखी?"

"मैंने तो कॉलेज में पढ़ा था।" घंटी बजाऊं या नहीं।

"हमारा भी तो कॉलेज होता है... वह मुस्कराया।" मेरा कॉलेज जेल खाना था! एक मारपीट में छ: महीने की जेल हो गयी थी वहीं उस्ताद से मुलाक़ात हुई...।

बच्चा फिर रोने लगा और उसी वक़्त दरवाज़ा खुला और मेरा छोटा भाई अपनी फ़ौजी वर्दी में दाख़िल हुआ। जवान लड़का था। कम्मन से कहीं ज़्यादा ताक़तवर था। उसके पास रिवाल्वर भी लटक रहा था। कम्मन उसको देखकर चौका और फिर जल्दी से नुस्ख़ा उठा कर चलने लगा। पकड़वाऊं या न पकड़वाऊं? मैंने जल्दी-जल्दी सोचा। अभी फ़ैसला न कर सकी थी कि वह बाहर चला गया।

"आपा! क्या बात है! परेशान क्यों हो?"

"तुम्हें मालूम है यह कौन था? यह वह व्यक्ति था जिसने मेरे यहां चोरी की थी।"

"तुम्हें कैसे मालूम हुआ?"

"मेरी इससे बातें हुई।"

"बातें हुई और तुमने उसको जाने दिया।" यह कहकर मेरा भाई दरवाज़े की तरफ़ लपका और बाहर निकलकर इधर-उधर देखा। सड़क साफ़ पड़ी थी। वह कुछ क़दम एक तरफ़ को भागा और सड़क के मोड़ पर भी जाकर देखा, वहां कोई न था।

अन्दर आकर ग़ुस्से से कहने लगा- "आपा तुम भी कमाल करती हो? चोर तुमको मिला और तुमने छोड़ दिया। यह गोरखा किस वास्ते नौकर रखा है? इसको क्यों न बुलाया। और जब मैं आ गया तब भी चुप रही।" रिवालवर पर हाथ फेर कर कहा, "मैं उस हरामज़ादे को कभी न जाने देता।" मेरा भाई एक मशहूर शिकारी भी है। इस वक़्त उसके चेहरे पर वही खिसयाहट थी जो शिकार हाथ से निकल जाने पर हुआ करती है।

"भला कहीं दुनिया में सुना है कि आदमी चोर को यूं निकल जाने दे।"

मैं ख़ामोश थी।

"आपा बहुत जज़्बाती हैं, बच्चे को देखकर पिघल गई होंगी। लो ज़रा सुनो उसकी हिम्मत का तो अंदाज़ा हो कि बीस रुपया यहीं छोड़ गया। यह भी चोरी के होंगे।"

"उसके पास तो पांच सौ के छ: सौ नोट थे।"

"वल्लाह आप बड़ी हैं तो हुआ करें। लेकिन हैं बहुत बेवक़ूफ़।"

यह बात अब मेरे मिलने वालों को मालूम हो चुकी है कि जिसने मेरे यहां चोरी की थी वह अब अपने बच्चे का इलाज करवाने आया था और मैं उसको पकड़वा सकती थी लेकिन जाने दिया। सब मेरा मज़ाक़ उड़ाते थे लेकिन कोई मेरी दिमाग़ी कशमकश को न समझता था। आज तक मेरी समझ में न आया कि मैंने ग़लती की थी या नहीं।

मेरे दोस्त पुलिस अफ़सर हैं जब उन्होंने सुना तो कहा, "मालूम है आपने क़ानूनी ग़लती की है। जिस आदमी के नाम पर वारंट हो उसको न पकड़वाना जुर्म है।"

मैं सोचती हूं उन चोरों का क्या होगा जिनके नाम पर न वारंट है और न कभी होंगे।

मैं अपने शहर की एक नागरिक हूं। कुछ शहरी ज़िम्मेदारियां मुझ पर लागू हैं इस चोर को न पकड़वा कर क्या मैंने कोई शहरी जुर्म किया है?

फिर मेरी नज़र चारों तरफ़ दौड़ने लगी। मैंने देखा कि बड़े-बड़े चोर बगुला भगत बने घूमते हैं, बड़े-बड़े मुहल्लों में रहते हैं, हवाई जहाज़ में उड़ते हैं और बड़े-बड़े खाये बैठे हैं या खाने की तैयारियां कर रहे हैं और अपनी हिफ़ाज़त के लिए कम्मन पुलिस को तो केवल रिश्वत ही देता था, यह उससे भी आगे बढ़े हुए थे। सारे देश की पुलिस व फ़ौज इनकी पगार पर थी। कम्मन 500, 600 चोरी के नोटों पर सिर अकड़ाकर और बराबर का होकर बात करता था, यह सिर्फ़ अकड़ते ही नहीं, बल्कि ऊपर से बैठकर आदेश भी देते हैं। ■■

(लिप्यांतर : **नग़मा परवीन**)



**आख़िरी पन्ना**



**नईम अलहिन्दी**

# सत्य की खोज

मनुष्य ईश्वर की सर्वोत्तम कृति है। ईश्वर ने मनुष्य को जो जीवन प्रदान किया है वह उसका सर्वोत्तम उपहार है। जीवन से जुड़ा एक महत्वपूर्ण प्रश्न अक्सर मन में उठता है कि आख़िर इस जीवन का उद्देश्य क्या है? मनुष्य अपने इस जीवन को आख़िर किस प्रकार गुज़ारे कि उसके जीवन का वास्तविक उद्देश्य पूरा हो सके? क्या वह अपने जीवन को मनमाने ढंग से गुज़ार दे? या इसे गुज़ारने का कोई ऐसा तरीक़ा भी है जोकि ईश्वर ने हम मनुष्यों के लिए तय कर रखा है? ऐसे तमाम प्रश्न हैं जो एक साधारण मनुष्य से लेकर दार्शनिकों तक के बीच बहस के कारण बनते रहते हैं।

मेरे विचार में, ऐसे प्रश्नों पर बुद्धिमान एवं धर्मनिष्ठ लोगों का जवाब तो यही होगा कि मनुष्य को अपना जीवन सत्य धर्म का पालन करते हुए गुज़ारना



चाहिए, ताकि ईश्वर उससे प्रसन्न हो और वह इस जीवन तथा मृत्यु के बाद मिलने वाले जीवन में भी अपने उद्देश्यों को प्राप्त कर ले और सफल हो सके। एक और बात जब सत्य धर्म की बात सामने आती है तो हम देखते हैं कि इस दुनिया में बहुत से धर्म, पंथ, मत, एवं संम्प्रदाय मौजूद हैं। ऐसे में सवाल उठता है कि किस धर्म के अनुसार हम अपना जीवन गुज़ारें? यह सही है कि सभी धर्मों में नैतिकता की मोटी-मोटी बातें समान नज़र आती हैं। मिसाल के तौर पर सत्य, अहिंसा, क्षमा, दया, ईमानदारी, न्याय और शांति आदि।

दूसरी ओर जब इन धर्मों के बीच असमानताओं पर नज़र डाली जाए तो पता चलता है कि उनमें ढेरों असमानताएं भी मौजूद हैं जैसे, हिन्दू धर्म में तलाक़ की इजाज़त नहीं है मगर यहूदियत में तलाक़ की इजाज़त है। इस्लाम में भी विशेष परिस्थियों में जबकि दम्पत्तियों का एक साथ रहना असंभव हो जाए, तलाक़ का प्रावधान है। ईसाइयत में पादरी के लिए विवाह करना वर्जित है, जबकि इस्लाम ने वैवाहिक जीवन को पसंद किया है। हिन्दू धर्म में धन दौलत यानी लक्ष्मी की पूजा होती है, मगर ईसाइयत में दौलत को बुरा माना जाता है।

बौद्ध धर्म में दुनिया छोड़कर सन्यास लेने को सबसे अच्छा माना जाता है, जबकि इस्लाम ज़िम्मेदारियों से भागने की नहीं उसे निभाने की शिक्षा देता है। सिक्ख मत में सिर और दाढ़ी के बाल काटना वर्जित है, जबकि बौद्ध धर्म में सिर और दाढ़ी के बाल साफ़ रखने को अच्छा माना गया है।

इतनी असमानताओं को देखते हुए हम कह सकते हैं कि मनुष्य के लिए सभी धर्मों की शिक्षाओं पर एक साथ अमल करना संभव नहीं है। मानव इतिहास में यह बात दर्ज है कि अलग-अलग समय में संसार के विभिन्न इलाक़ों में लोगों को सत्य मार्ग दिखाने एवं उनका मार्गदर्शन करने के लिए ऐसे भले और पवित्र चरित्र रखने वाले लोगों ने जन्म लिया, जिन्होंने अपने आपको ईशदूत, पैग़म्बर और प्रोफेट बताया। उन्होंने इस दुनिया में जीवन गुज़ारने की शिक्षाएं तो दीं ही मृत्यु के बाद भी सफल होने का मार्ग बताया।

**कुरआन की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि यह आज भी अपने मूल रूप में न केवल सुरक्षित है, बल्कि पिछले ईश्वरीय ग्रंथों की मूल शिक्षाओं का सार भी इसमें मौजूद है। इसी किताब के ज़रिये इन्सानों को अब सच्चा मार्गदर्शन प्राप्त हो सकता है। ईश्वर ने हर इन्सान को बुद्धि और विवेक देकर उसे यह आज़ादी दी है कि वह सत्य धर्म की खोज करे, क्योंकि इन्सान को उसके कर्मों के अनुसार ही मृत्यु के बाद परिणाम भुगतने होंगे।**

इन पैग़म्बरों ने लोगों के सामने इन शिक्षाओं पर पहले ख़ुद अमल करके दिखाया। वे जो शिक्षाएं लाएं वे शिक्षाएं सत्य पर आधारित शिक्षाएं थीं, उन्होंने लोगों को ईश्वरीय ग्रंथ प्रदान किए। इसी कड़ी में आज से लगभग 1400 वर्ष पहले अरब में, हज़रत मुहम्मद (सल्ल.) पर पैग़म्बरों का यह सिलसिला ख़त्म हो गया। इसीलिए हज़रत मुहम्मद (सल्ल.) को ईश्वर का अंतिम दूत कहा गया। इसके साथ ही कुरआन अंतिम ईश्वरीय ग्रंथ के रूप में उन पर अवतरित हुआ।

क़ुरआन की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि यह आज भी अपने मूल रूप में न केवल सुरक्षित है, बल्कि पिछले ईश्वरीय ग्रंथों की मूल शिक्षाओं का सार भी इसमें मौजूद है। इसी किताब के ज़रिये इन्सानों को अब सच्चा मार्गदर्शन प्राप्त हो सकता है।

ईश्वर ने हर इन्सान को बुद्धि और विवेक देकर उसे यह आज़ादी दी है कि वह सत्य धर्म की खोज करे, क्योंकि इन्सान को उसके कर्मों के अनुसार ही मृत्यु के बाद परिणाम भुगतने होंगे।

हर व्यक्ति को यह आज़ादी तो है ही कि वह चाहे तो सत्य धर्म की खोज करे, साथ ही यह मनुष्य का कर्तव्य भी है वह अपने लिए सत्य के मार्ग को चुने। इस परिप्रेक्ष्य में सबसे महत्वपूर्ण और उल्लेखनीय बात यह है कि इस्लाम अपने धर्मावलंबियों को किसी अन्य धर्म के मानने वालों, उनके धर्म ग्रंथों, उपासना स्थलों या उपास्यों का अपमान न करने की शिक्षा पर ज़ोर देता है।

■■

**KANTI** Monthly, New Delhi
**NOVEMBER 2021**
Posted on 20-21 October 2021
Published on 18 October 2021
Posted Delhi RMS Delhi-110006

**RNI 53372/91**
**DL(S)-05/3147/2021-2023**
**LICENSED TO POST WITHOUT PREPAYMENT**
**License No. U(SE)-73/2021-2023**
**Total Pages with Cover: 52**

اللہ کے رسولؐ نے ارشاد فرمایا۔
میں اچھے اخلاق کو مکمل کرنے کے لئے بھیجا گیا ہوں
(مؤطہ امام مالک:705)

*With Best Compliment from*

sagar

**SAGAR FEEDS & FOODS PROCESSING INDUSTRIES**

Plot No. L-21, Gidc Concolim Industrial Estate
Concolim-403703 GOA
Email: sagarffpi@gmail.com